जनवरी 2020

दादावाणी

क्षेत्र का महत्व है ही। इनके आसपास का वातावरण ऐसा होता है कि हमें सुगंध आती है। जहाँ बड़े-बड़े महान संत और ज्ञानी पुरुष घूमे हों, वह तीर्थक्षेत्र बन जाता है।

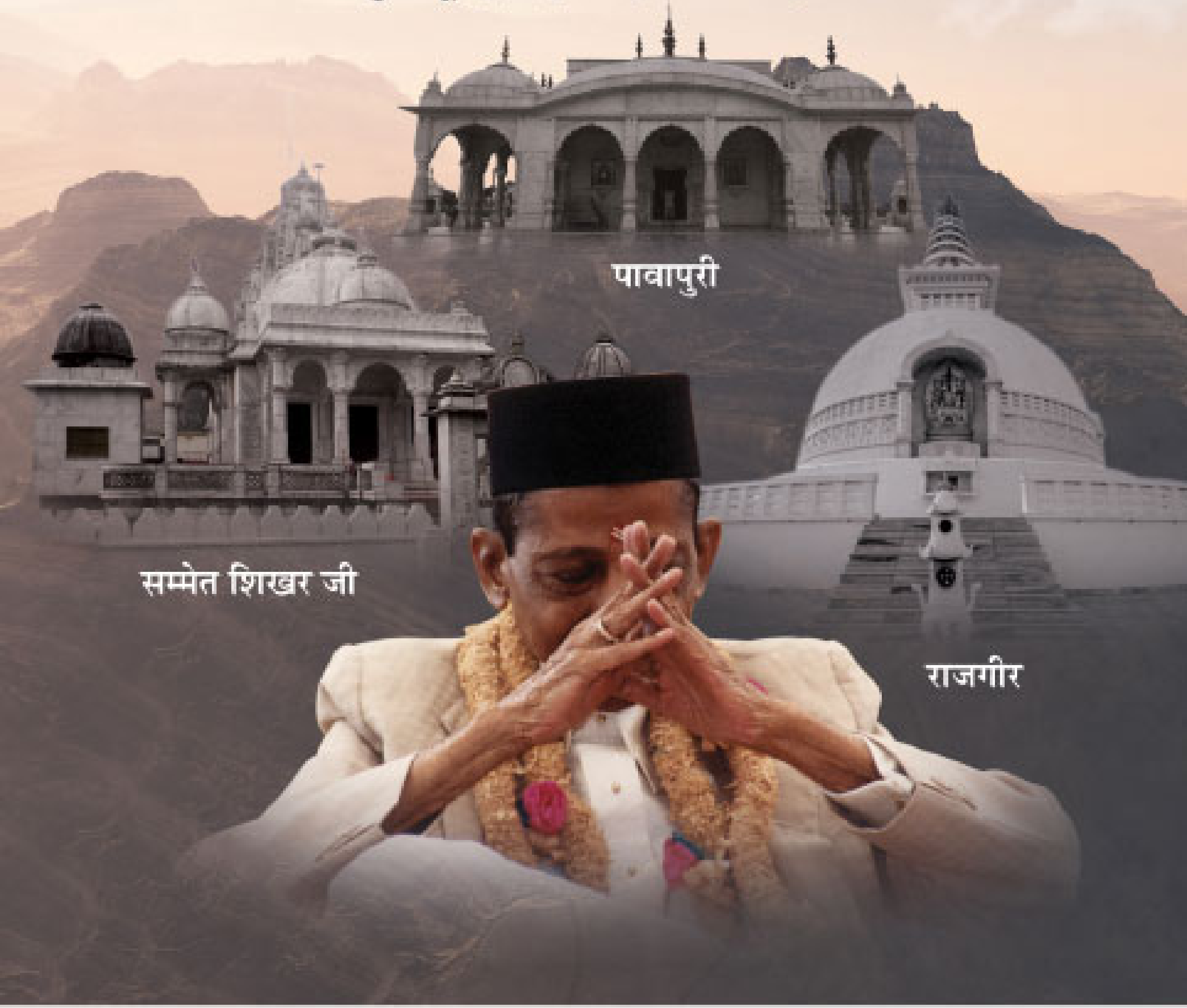

Retail Price ₹ 15

वर्ष : 15 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 171
जनवरी 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी के साथ यात्रा का जैकपॉट

संपादकीय

ज्ञानी की कृपा से आत्मज्ञान द्वारा हमें सम्यक् दृष्टि मिलती है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसकी प्रतीति बैठती है, उसके साथ ही कुछ अंश तक अनुभव भी होता है। अब, इस अनुभव की श्रेणी को आगे बढ़ाने के लिए महात्माओं को क्या करना बाकी रहता है? आज्ञा पालन का पुरुषार्थ शुरू करना और उसके साथ ही ज्ञानी के परिचय में रहना। जागृति बढ़ाने के लिए जितना ज़रूरी सत्संग का परिचय है, उतना ही ज़रूरी ज्ञानी का परिचय भी है।

ज्ञानी का परिचय कैसे प्राप्त होगा? प्रत्यक्ष सत्संग से, उनके साथ रहने से, उनके आशय को समझने से वगैरह... उसी प्रकार ज्ञानी के साथ यात्रा करना भी ज्ञानी का परिचय प्राप्त करने का बड़ा अवसर है। वास्तव में यात्रा क्या है? जहाँ-जहाँ ज्ञानी के चरण पड़ें, वही तीर्थ स्थान! तो फिर प्रश्न यह उठता है कि ज्ञान के बाद ज्ञानी के साथ यात्रा में जाने का प्रयोजन क्या है? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) हमेशा बताते कि यह यात्रा भी हमारे पूर्व कर्म की *निर्जरा* है। पहले जाने-अनजाने में जो विराधनाएँ की थीं, उन विराधनाओं को धोने के लिए यह प्रयोजन है। हम कर्ताभाव से यात्रा नहीं करते।

वास्तव में तो यात्रा आत्महेतु और भक्ति हेतु के लिए होती है। अब, यात्रा में महात्माओं को सुख कैसे आता है? वे जब घर संसार से छूटते हैं तब अंदर सुख उत्पन्न होता है। यात्रा में ही महात्माओं को खुद की प्रकृति को देखकर उसे खपाने के और खुद की गांठों को तोड़ने के संयोग मिलते हैं। ऐसे में वे यदि एडजस्टमेन्ट ले लेते हैं तो ज्ञान अनुभव परिणामित होता है। दादाश्री हमेशा बताते कि 'आप जहाँ कहीं भी यात्रा करने जाओ, वहाँ पर यदि ऐसी जागृति रखी जाए कि वहाँ किसी को दुःख न हो और उस क्षेत्र के नियमों का पालन किया जाए तो वही वास्तविक यात्रा है।'

फिर भी बड़ी-बड़ी यात्राओं में महात्माओं का डिस्चार्ज माल उन्हें आपस में लड़वाता है, टकराव करवाता है लेकिन वे कहते थे कि 'जितना लड़ना हो उतना लड़ना। लड़ने से भरा हुआ माल खाली हो जाता है! इसलिए हम किसी को डाँटते नहीं, क्योंकि लड़ने के बाद हमारे महात्मा, हमारी हाज़िरी में ही प्रतिक्रमण कर लेते हैं जिससे कि उनमें कोई जुदाई नहीं रहती, भेद नहीं रहता।'

दादाश्री कहते थे, कि 'हमारा जीवन खुद के लिए नहीं है, हम इस हेतु से यात्रा करते हैं कि सभी को यात्रा का लाभ मिले।' महात्माओं के लिए इस यात्रा का मुख्य हेतु क्या है? दिन-रात ज्ञानी पुरुष का परिचय प्राप्त हो, उनका व्यवहार, उनकी आंतरिक परिणति, उनकी सहज दशा देखने को मिले, वही मुख्य हेतु है। शास्त्रकार तो कहते हैं कि यदि आप छः महीने तक ज्ञानी पुरुष के साथ घूमोगे तो प्रूफ हो जाओगे, शीघ्रता से हल आ जाएगा। करोड़ों रुपये देने पर भी कहाँ ज्ञानी पुरुष के साथ यात्रा करने को मिल सकती है? यही तो आश्चर्य है न! महात्माओं का पुण्य है न!

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी के साथ यात्रा का जैकपॉट

जहाँ ज्ञानी पुरुष के चरण पड़े, वही तीर्थ

प्रश्नकर्ता : सभी धर्मों में यात्रा करने का महात्मय है, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : यात्रा में तो देखने को मिलता है, जानने को मिलता है कि यह संसार क्या है, और जिस जगह पर उच्च पुरुषों ने विचरण किया हो न, उस जगह का वातावरण मिलता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, ये सभी तीर्थ... जो तीर्थ स्थल हैं, वे सभी सच में ऐसे हैं?

दादाश्री : यात्रा किसे कहते हैं? जहाँ ज्ञानी पुरुष पैर रखते हैं, वहाँ तीर्थ स्थान बन जाता है। जहाँ-जहाँ ज्ञानी पुरुष के चरण पड़ते हैं, वह तीर्थ धाम कहलाता है। ये सभी जगहें जहाँ हमारे चरण पड़े हैं, वे तीर्थ स्थल हैं। बाद में किताबों में लिखा जाएगा कि दादा यहाँ आए थे और इस कुर्सी पर बैठे थे और इस गाँव में पधारे थे।

यात्रा में सुख किस कारण से?

प्रश्नकर्ता : तो फिर बाकी ये सभी यात्रा करने जाते हैं तो क्या, वह निरर्थक है न?

दादाश्री : यह तो, जब लोग घर से ऊब जाते हैं न, तब बाहर जाने का मन होता है। तब वे कहते हैं 'चलो यात्रा पर चलते हैं।' जब लोग पूछते हैं कि यात्रा में सुख कैसे आता है? तब मैं उन्हें समझाता हूँ कि यहाँ घर से निकले स्टेशन जाने के लिए तो उन्हें आराम महसूस होता है। 'अरे, अब बच्चों से छूटे, ऐसा कहेंगे।' सास से छूटी, बेटे से छूटी, पति से छूटी और फिर स्टेशन पर रौब से घूमती है। कोई बाप भी कहने वाला नहीं रहा। बेटे से छूटी, वर्ना बेटा कहता 'फीस लाओ, फलाना लाओ' और दिन भर दु:खी करता रहता है। यानी कि इसमें बेचारी को बेटे के दु:ख से मुक्ति मिली। इसलिए गाड़ी में उसे शांति लगती है। यह तो, दु:ख से मुक्ति मिली, उस कारण यह सारा सुख है, और तैयार थाली मिलती है। उसकी वजह से वहाँ सुख लगता है। बाकी और कोई भी सुख नहीं है। यहाँ से, इन सभी से छूटे, उस कारण से यह सुख है और वह समझती है कि इसमें से सुख आया, यात्रा में से सुख आया।

भगवान तो अंदर बैठे हैं लेकिन ये तो बाहर ढूँढते फिरते हैं। लोग तीर्थ में किसलिए जाते हैं, आप जानते हो? क्योंकि यहाँ की झंझट से थोड़े समय के लिए तो छूट सकते हैं न! यहाँ से छूटा और स्टेशन गया, तो आनंद आता है! जबकि आता है आनंद इसमें से। इन सभी से मुक्ति मिलती है इसलिए इंसान को आनंद होता है। और उसे ऐसा लगता है कि तीर्थ में से आनंद आया। लेकिन तीर्थ में आनंद है क्या? तीर्थ किसलिए कहा गया? तीर्थ में सिर्फ इतना ही है कि वहाँ आपको किसी महान पुरुष के दर्शन होते हैं। यदि ऐसी जगह पर आपको महान पुरुष, संत पुरुष मिल जाएँ तो आपको लाभ होगा। इसीलिए ये सारे तीर्थ हैं। बाकी तीर्थ में

यदि संत पुरुष नहीं मिलें, यदि प्रपंची मिलें तो भला हो उस तीर्थ का! भगवान अपने घर में ही बैठा है, उसके लिए ज़्यादा दूर नहीं जाना है। टिकिट लेने की ज़रूरत ही नहीं है।

वह कहता है न, अखा, कि हर जगह भटका पर कुछ नहीं मिला, फिर भी ब्रह्मज्ञान नहीं मिला। यह सारा संसार ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए है।

तीर्थक्षेत्रों का महत्व

प्रश्नकर्ता : ये जो तीर्थ क्षेत्र हैं, तीर्थ स्थल हैं, उस पुण्य भूमि का कुछ महत्व है क्या?

दादाश्री : महत्व तो है। क्षेत्र का महत्व होता है। क्षेत्र तो मुख्य चीज़ है। पहले क्षेत्र देख लेना चाहिए। क्षेत्र के आसपास ऐसा वातावरण होना चाहिए कि हमें खुशबू आए। क्षेत्रों की कीमत भी अगल-अगल प्रकार की होती है। क्षेत्र से तो बहुत फर्क पड़ता है। और तीर्थ क्षेत्र में तो बड़े-बड़े संत और ज्ञानी पुरुष घूमे होते हैं, इसलिए वे तीर्थ क्षेत्र बनते हैं।

प्रश्नकर्ता : सत् पुरुषों के आंदोलन सौ-सौ, दो सौ-दो सौ सालों तक रहते हैं, क्या?

दादाश्री : हाँ, दो सौ से भी ज़्यादा। योगियों के तो उससे भी ज़्यादा। आंदोलन तो बहुत समय रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : और ज्ञानियों के आंदोलन तो सब से ज़्यादा समय तक रहते हैं न?

दादाश्री : ज्ञानी इसमें नहीं पड़ते। वह सब योगी पुरुषों का काम है। संसार को निभाए रखना, टिकाए रखना, वह सब योगियों का काम है। ज्ञानी तो अपना काम करके चले जाते हैं, वे फिर यहाँ पर खड़े नहीं रहते।

प्रश्नकर्ता : यह वाणी रूपी जो परमाणु निकलते हैं, वे उनकी...

दादाश्री : वे रहते हैं। वे तो रहेंगे। वे भी जितने किसी किताब में होंगे उतने चलेंगे।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान होने के बाद समोवसरण में तीर्थंकरों की जो वाणी निकली, ज्ञानी पुरुष की वाणी, वह आज भी ब्रह्मांड में घूम रही है न? उसे ऐसे देख सकते हैं न?

दादाश्री : हाँ, वह पूरा चक्र घूमती है, उसके बाद नष्ट हो जाती है। वह पूरे चक्र में भ्रमण करती है। अतः जिसे टेप करना हो वह कर सकता है। इसलिए इन तीर्थंकरों के लिए कहा गया है, कि वे जहाँ भी जाते हैं, वहाँ तीर्थ बन जाता है। हमारा तीर्थंकरों जैसा नहीं है, थोड़ा कम है।

क्षेत्र का भी प्रभाव

प्रश्नकर्ता : जिस तरह से इंसान के वाइब्रेशन होते हैं उसी तरह से क्षेत्र के भी वाइब्रेशन होते हैं न? वैसा वातावरण होता है?

दादाश्री : हर एक का वातावरण होता है। यदि एक पेड़ हो तो उसका भी वातावरण होता है। क्षेत्र का भी वातावरण होता है। किसी क्षेत्र में जाने पर खराब विचार आते हैं। अपने यहाँ जो कुरुक्षेत्र है न, वहाँ पर जाने पर लड़ने के ही विचार आते हैं। यदि दो व्यक्ति वहाँ से होकर जाएँ न, तो वे आपस में लड़ ही पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् इस रूम का भी वातावरण है न?

दादाश्री : हर एक का वातावरण है। इस रूम का जो महत्व है, वह उस रूम में नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : किसी क्षेत्र में जाने पर ज्ञान मिलता है, किसी क्षेत्र में जाने पर क्रोध आता है, तो क्या भूमि का फर्क पड़ता है? ऐसा है क्या कि हर एक क्षेत्र में अगल-अगल भाव होते हैं?

दादाश्री : हाँ। हर एक क्षेत्र में अलग-अलग भाव होते हैं।

क्षेत्र का हिसाब तो बहुत... यदि जौहरी बाज़ार में इतनी बड़ी दुकान हो तो उसकी कीमत बहुत ज़्यादा होगी और यदि कहीं दूसरी जगह चाहे कितनी भी बड़ी हो, तो उसकी क्या कीमत? अत: क्षेत्र की, उस जगह की ही कीमत है, वह।

ज्ञान के बाद यात्रा किसलिए?

अब यह ज्ञान प्राप्त हो चुका है फिर भी यह यात्रा करने का क्या कारण है?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान का प्रचार बढ़ाने के लिए?

दादाश्री : नहीं, उसके लिए नहीं। इस ज्ञान का प्रचार तो करना ही नहीं है। यदि प्रचार करना होता तब तो हर एक गाँव में परेशानी हो जाती, मुझे परेशानी हो जाती। फिर भी स्टेशन पर लोगों ने दौड़भाग कर ही दी थी। क्योंकि जब ऐसे गरबा गाते हैं न, तो सब देखकर आश्चर्य होता है कि ये लोग कौन है? ज्ञानी पुरुष क्या हैं? लेकिन यह पूर्व कर्म की *निर्जरा* (आत्मप्रदेश में से कर्मों का अलग होना) करते हैं। क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : पूर्व कर्म की *निर्जरा*।

दादाश्री : हाँ, वह भी फिर समभाव से। कैसे?

प्रश्नकर्ता : समभाव से।

दादाश्री : हाँ, वे कर्ताभाव से यात्रा नहीं करते। यह यात्रा पुण्य पाने के लिए नहीं है। जो है उसकी *निर्जरा* करने के लिए है। क्या है?

प्रश्नकर्ता : जो है उसकी *निर्जरा* करने के लिए है।

दादाश्री : ये सारे सत्संग क्यों करने हैं? वह भी *निर्जरा* करते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हम जैसे लोगों को तीर्थ स्थल पर जाने से क्या फायदा?

दादाश्री : ज्ञान लेने के बाद फायदा तो सिर्फ इतना ही है कि यदि हम वहाँ पर जाते हैं तो हमारे कितने ही कर्मों की *निर्जरा* हो जाती है और हम वहाँ पर जा कैसे सकते हैं? यदि *पूरण* (चार्ज) किया होगा तभी जा सकते हैं न? हम स्वतंत्र रूप से थोड़े ही जा सकते हैं? यदि *पूरण* किया होगा तभी *गलन* (डिस्चार्ज) होगा न! यदि *पूरण* नहीं किया होगा तो न भी हो। फिर जो भी हो उसे देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद तीर्थ स्थलों पर यात्रा करने जाते हैं न, तो क्या उन तीर्थ स्थानों पर जाने की ज़रूरत है?

दादाश्री : किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। फिर भी यदि जाना पड़े तो जाना होगा। तीर्थ में जाना पड़ता है लेकिन कहीं भी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रही। देरासर में दर्शन करने की भी ज़रूरत नहीं है न! वह तो कर्म के उदय से जाना पड़ता है, सभी जगह जाना पड़ता है। शरीर कर्म के उदय के अनुसार बरतता है। हम तो आपको आत्मा दे देते हैं, उस आत्मा का ही पोषण करते रहना है। इतना ही करने जैसा है, सिर्फ आत्मा का ही। ज्ञान अर्थात् आत्मा को हाथ में पकड़ा देना। ऐसा कि निरंतर आत्मा में ही रह सके।

यात्रा, वह चारित्र मोह का निकाल

प्रश्नकर्ता : यात्रा करके आए, वह सारा चारित्र मोह है न?

दादाश्री : नहीं तो और क्या? ज्ञान लेने से पहले जो यात्रा की थी वह आपका मोह था। 'मैं चंदूभाई हूँ' और 'यह यात्रा कर रहा हूँ'। अब आप शुद्धात्मा हो गए हो और यात्रा करते हो, इसलिए यह चारित्र मोह है। अब यात्राएँ क्यों

करनी हैं? तो कहते हैं कि यह जो माल भरा है, उसका निबेड़ा तो लाना होगा न। थोक में जो माल भरा है, उसे बेचना तो पड़ेगा न!

आप यात्रा में आए थे वह भी चारित्र मोह। वहाँ दर्शन कर रहे थे वह भी चारित्र मोह। आप उसका *निकाल* (निपटारा) कर देते हो। यात्रा भी फाइल ही है न! चारित्र मोह का *निकाल* करते हो, उसका ग्रहण भी नहीं और त्याग भी नहीं। समभाव से *निकाल* अर्थात् वीतरागता, राग या द्वेष नहीं।

प्रश्नकर्ता : राग-द्वेष या तिरस्कार हुए होंगे?

दादाश्री : उन तिरस्कारों का *निकाल* करने के लिए सभी जगह घुमाते हैं। राग और द्वेष किए। जहाँ पसंद है वहाँ राग किया हो उसका भी *निकाल* करना है, नापसंद पर द्वेष किया होगा तो उसका भी *निकाल* करना है। इनका *निकाल* करने के लिए ही ये यात्राएँ हैं। इसमें अन्य कुछ भी नहीं है। और उतने समय तक साथ में रह पाते हैं, सभी एक साथ रह पाते हैं। लेकिन, *निकाल* (निपटारा) बहुत बड़ी चीज़ है।

अपना अभिप्राय ऐसा रखना

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन जब मंदिर में जाकर पत्थर की मूर्ति देखते हैं तो कुछ भाव नहीं आता, ऐसा भाव नहीं आता।

दादाश्री : यह भी पत्थर की ही है न। यह जो दिखाई देती है, वह भी पत्थर की ही है। आँखों से पत्थर के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : इस आँखों से पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखाई देता?

दादाश्री : हाँ, चेतन नहीं दिखाई देता। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, जाने पर वहाँ ऐसा विचार आता है कि इसके बजाय किसी संत के पास जाते तो अच्छा था।

दादाश्री : वह ठीक है। बात सही है। लेकिन अब तो ज्ञान मिलने के बाद ऐसा कुछ नहीं है कि हमें जाना ही है। जो होता है वह देखते रहो। लेकिन अभिप्राय तो सिर्फ यही रखना है कि फाइलों का समभाव से *निकाल* करना है। अपना अभिप्राय ऐसा होना चाहिए।

यात्रा, विराधना धोने के लिए है

यदि ज्ञानी पुरुष और यात्रा दोनों मिल जाएँ तो कितना मज़ा आएगा?

प्रश्नकर्ता : बहुत मज़ा आएगा लेकिन इसका प्रयोजन क्या है?

दादाश्री : अब प्रयोजन ढूँढ रहा है! इसके प्रयोजन में क्या बच्चे होने हैं? इसके प्रयोजन में मुक्ति होगी। प्रयोजन कैसा ढूँढना? जो व्यवस्थित है, यदि आ पड़े तो हमें उसका निबेड़ा लाना है। क्या करना है? हम इसके कर्ता नहीं हैं, यह तो आ पड़ा है?

तुझे समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ! अब समझ में आया।

दादाश्री : अभी तक क्यों समझ में नहीं आ रहा था?

प्रश्नकर्ता : क्योंकि अभी तक तो ऐसा ही था कि हमने तीर्थ स्थान में जितनी भी विराधनाएँ की हैं, उनकी आराधना करने के लिए अपना यह प्रयोजन है।

दादाश्री : हाँ! लेकिन फिर वह व्यवस्थित है।

प्रश्नकर्ता : प्रयोजन व्यवस्थित है।

दादाश्री : हाँ... जो विराधनाएँ की हैं, वे

विराधनाएँ खत्म हो जाती हैं। अपने ऊपर तो आ पड़ा है न, शौक के लिए नहीं करते। जो आ पड़ी हैं, उन फाइलों का *निकाल* करते हैं। जो उदय में आए उन फाइलों का *निकाल* करते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यात्रा में तो हम उत्साह पूर्वक जॉइन्ट हो जाते हैं न?

दादाश्री : अब यहाँ आना हुआ इसलिए उत्साह तो रहेगा ही। अभी जब तक शादी नहीं करनी हो तब तक ब्रह्मचर्य का पालन करता है। लेकिन एक दिन शादी करने का इरादा हो जाए तो फिर उत्साह पूर्वक ही करेगा। जब से तय किया तभी से खुशी होने लगती है। हमें यह सब पसंद है क्या? लेकिन उसमें उत्साह नहीं होती ऐसा नहीं होता न? ये सभी उत्साह होकर करते हैं वही अच्छा है न?

प्रश्नकर्ता : वही अच्छा है।

दादाश्री : आत्मा जानता है कि वह कैसा कर रहा है! उत्साह होकर कर रहा है। कैसे कर रहा है?

आराधना से टूटती है विराधना

प्रश्नकर्ता : निश्चय से जो विराधनाएँ की थीं, व्यवहार से उनकी आराधना होती है।

दादाश्री : और जब हम यह यात्रा करके आए तो मुझसे पूछने लगे कि 'इन देवी-देवताओं के दर्शन करने की ज़रूरत थी क्या?' तब मैंने बताया कि 'नहीं, लेकिन इन लोगों के साथ हमने जो दखल की थी, उस दखल की समाप्ति करने के लिए हम वहाँ गए थे।' क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : निश्चय से जो विराधनाएँ की थीं, व्यवहार से नमस्कार करके उनकी आराधना करनी है।

दादाश्री : हाँ। लेकिन निश्चय से जो विराधनाएँ की थीं उन्हें अब व्यवहार से नमस्कार करके, उनका निबेड़ा लाना है। फिर चाहे वे जैनों के हों या मुस्लिमों के हों या किसी और के हों लेकिन हमें उनसे कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए यह यात्रा है।

यात्रा में सभी जगह दर्शन करने हैं

हम यात्रा में जाते हैं तो सभी जगह दर्शन करते हैं। पक्षपाती तो कहेंगे, 'यहाँ नहीं, हम तो जैन हैं इसलिए वैष्णव के दर्शन करने नहीं जा सकते।' यों सभी जगह आड़ाई की थी। उन सभी भूलों को धोना तो पड़ेगा न? इसलिए हम राम के, कृष्ण के, जैनों के मंदिर में सभी जगह दर्शन करने जाते हैं।

हम अयोध्या और सम्मेत शिखर यात्रा में गए थे! तब अपना तो यह कैसा निष्पक्षपाती मार्ग है न, कि यदि कहीं पर माता जी हों तो वहाँ भी दर्शन करने गए थे। इसलिए हम सभी, पूरी बस को रणछोड़ जी के मंदिर में ले गए। वहाँ पर रणछोड़ जी के दर्शन करके जैसे ही बाहर निकले, उतने में इनमें से किसी ने कहा कि, 'रणछोड़ जी तो खुद ही आए हैं!' फिर लोग तो छोड़ेंगे ही नहीं न! फिर तो यों देखते ही लोग दर्शन करने लगे। सभी ब्राह्मण, पुजारी-वुजारी, सभी लोग दर्शन करके गए। बाद में हम से पूछने लगे कि क्या आप रणछोड़ जी हैं? मैंने कहा कि 'हाँ, रणछोड़ जी। माँग, तुझे जो माँगना हो, वह माँग। माँगना भूल जाएगा। आज रणछोड़ जी नकद (खुद) आए हैं। वहाँ पर सभी आ गए थे न? सब घेर लेते हैं न। जब राम के मंदिर में जाते हैं तो हम कहते हैं कि हम राम हैं, महावीर के मंदिर में जाते हैं तो वैसा कहते हैं।

हम तो माता जी वगैरह सभी के पास जाते हैं। जब माता जी के पास जाते हैं तब ये बेचारी गरीब स्त्रियाँ आती हैं न, तब हम माता जी को

यहाँ से खबर कर देते हैं कि इस बहन का ज़रा देख लेना। अपने महात्माओं के लिए कहते हैं। महादेव जी से भी कहते हैं कि आप इनका देख लेना ज़रा। और हमारा तो वे मानते हैं। हम तो वीतरागी हैं! हमारा कहना तो पूरा वर्ल्ड मानता है, क्योंकि हमने सभी को स्वीकार किया है। पूरे संसार को स्वीकार किया है।

पालीताणा की यात्रा में देवगण हाज़िर

ज्ञानी पुरुष तो जब नवकार मंत्र बोलते हैं, मंत्र बोलते हैं न तो पालिताणा की यात्रा में क्या हुआ था?

प्रश्नकर्ता : चावल की वृष्टि हुई थी।

दादाश्री : वह निरी चावल की वृष्टि हुई थी। यात्रा करने के लिए बड़ौदा से हम पचास लोगों की बस लेकर गए थे। वहाँ आपके कच्छ में गए थे।

प्रश्नकर्ता : भद्रेश्वर।

दादाश्री : भद्रेश्वर और सभी जगह। अंबाजी, भदेश्वर, मेहसाणा में सीमंधर स्वामी का मंदिर, शंखेश्वर, बेचराजी, महुड़ी-मधुपूरी, सभी जगह हम बस से घूमे थे। भद्रेश्वर जाकर फिर वहाँ पर भचाउ में खाना खाया था। और फिर श्रीमद् राजचंद्र के आश्रम ववाणिया गए थे। ववाणिया जाकर फिर राजकोट, राजकोट से वापस जामनगर, जामनगर से द्वारका, द्वारका से पोरबंदर, वांकानेर, सोमनाथ, पाटण। सोमनाथ जाकर फिर पालिताणा। और पालिताणा में चावल की वर्षा हुई थी।

वहाँ अपने पचास लोग बैठे थे और बाकी दूसरे लोग भी थे। सभी पर चावल गिरे थे। जैसे ही मैंने मंत्र बोला, तो तुरंत ही चावल गर, गर, गर, गर.. करके गिरे। ज्ञानी पुरुष के ऐसे मंत्र। ज्ञानी पुरुष के बोलते ही वहाँ पर देवगण हाज़िर हो जाते हैं। अब समझ में न आए तो फिर क्या हो सकता है? ज्ञानी पुरुष मुफ्त में ही चले जाते हैं। समझ में नहीं आए तो वह हीरा बेकार। उनकी कीमत समझ में नहीं आती।

वहाँ पालिताणा में काकू भाई नाम के ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण हैं। वे दोनों भाई कहने लगे, 'दादा, हम इन्द्रभूति के वारिस हैं। आपके दर्शन होते ही हमें चिदानंद उत्पन्न हुआ। यों पहले ही क्षण में चिदानंद,' वे कहने लगे, 'ऐसा चिदानंद कभी भी नहीं देखा।'

सच्चे महादेव जी के दर्शन

जहाँ महादेव जी का मंदिर होता है, वहाँ जाकर हम क्या कहते हैं?

त्रिशूल छतांय जगत झेर पीनारो,
शंकर पण हूं ज ने नीलकंठ हुँ ज छुं।

इतना बोलते ही लोगों को ऐसा लगता है कि जैसे महादेव जी खुद ही मंदिर में आ गए। अत: दर्शन करने के लिए सभी दौड़भाग करने लगते हैं। ऑफिस वाले भी। उनका ऑफिस होता है न, महादेव जी का। ऐसा तो कोई कह ही नहीं सकता न। जो महादेव जी हो, वही कह सकते हैं। वर्ना ऐसा कोई नहीं कह सकता। क्योंकि जो शिवलिंग है न, यदि कोई बोले तो उसके सिर पर साँपों का ढेर डाल देंगे। परंतु यदि असली महादेव जी होंगे तो वे साँप नहीं डालेंगे। हम तो वास्तव में महादेव जी हैं। इसलिए हर महादेव जी के मंदिर में ऐसा बोलते हैं। हर एक महादेव जी के मंदिर में जहाँ आते हैं न, वहाँ ऐसा बोलते ही है। तब सभी वहाँ आकर दर्शन कर जाते हैं। तो वास्तव में यही महादेव जी के दर्शन हुए न।

सही पहचान बताकर, करवाते हैं दर्शन

जहाँ कृष्ण का आए, वहाँ पर हमें ऐसा

कहना पड़ता है, 'मैं कृष्ण हूँ।' अत: लोग दर्शन कर जाते हैं और महावीर का आए तो 'मैं महावीर हूँ,' तब ये सभी दर्शन कर जाते हैं। वर्ना पहचान करवाए बगैर कैसे पता चलेगा लोगों को? पता चलेगा क्या? पहचान करवानी पड़ती है। और मुस्लिमों के हम खुदा कहलाते हैं। उनका खुलासा भी देता हूँ न, कि मैं खुदा कैसे? जो खुद को जाने वह खुदा। दूसरा खुदा कहाँ से लाए, भाई? इन क्रिश्चयनों से कहते हैं कि हम क्राईस्ट हैं। तुझे जो भी समझना हो वह पूछ ले। और उनके साइन्टिस्टों से हम कह देते हैं कि हम क्राइस्ट हैं। तुझे जो समझना हो समझ ले। और आपके सारे झगड़े निपटा देंगे।

निश्चय तो मिला लेकिन व्यवहार मत चूकना

यह जैन *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) और वह वैष्णव *पुद्गल* दोनों ही हमारे साथ आते हैं, वे सभी सम्मेत शिखर की यात्रा करते हैं। लेकिन रास्ते में जहाँ कहीं भी यात्रा का धाम हो वहाँ व्यवहार से दर्शन करते हैं। निश्चय तो अपने पास है लेकिन व्यवहार नहीं चूकना है। व्यवहार डिस्चार्ज स्वरूपी है। पहले जो फिल्म बन गई है, उसका व्यवहार करना है। यह नया नहीं है। अत: हम जहाँ जाते हैं वहाँ यदि देरासर आए तो देरासर में, वैष्णवों का धाम आए तो वहाँ वैष्णवों का, माता जी का धाम आए तो माता जी का, सभी जगह जाते हैं। और सभी का एक ही मत रहता है। किसी को कोई आपत्ति भी नहीं और कोई दिक्कत भी नहीं, कुछ भी नहीं। क्योंकि अब हम आत्मा हैं। अपना यह व्यवहार तो सारा *निकाली* है। यह ग्रहणीय नहीं है। जैन, जैन *पुद्गल* खत्म कर करेंगे, वैष्णव, वैष्णव *पुद्गल* खत्म करेंगे। सभी अपने-अपने *पुद्गल* खत्म करेंगे। वैष्णवों को, जैन के मंदिर में कोई आपत्ति नहीं, किसी को आपत्ति नहीं क्योंकि हम आत्मा हैं।

माथेरान की यात्रा के समय

एक बार हम यहाँ से यात्रा के लिए माथेरान जा रहे थे। दादर स्टेशन पर बैठे थे। साढ़े छ: बजते ही वहाँ की सारी बत्तियाँ एकदम से बंद हो गई। तब मैंने सभी से पूछा कि ये बत्तियाँ एकदम से बंद क्यों कर दी? तब वे कहने लगे, 'दादा, उजाला हो गया हैं, इसलिए। तब मैंने कहा, हम में आत्मा का उजाला हो गया है। अत: वह बत्ती बंद कर दो। मूर्ख भी उसे जलाए नहीं रखता। उस बत्ती की वजह से तो यह सारा बखेड़ा है। अब उन बत्तियों की ज़रूरत नहीं है, उन्हें बंद कर देना चाहिए। हम अबुध हैं। इस बुद्धि की वजह से ही तो चेहरे उतरे हुए दिखाई देते हैं। मुँह पर जैसे अरंडी का तेल लगा दिया हो! बुद्धि की ज़रूरत नहीं है। आपको बुद्धि से कह देना है कि 'बहन, तू बैठ जा। बहुत दिनों तक काम किया है तूने। अब, तुझे पेन्शन दे देंगे। तेरी पेन्शन मिलती रहेगी।'

यह तो, बुद्धि का अमल हो जाता है। जहाँ पर इतना प्रकाश हुआ है, सारे वर्ल्ड का प्रकाश उत्पन्न हुआ है, वहाँ पर अब, इस बुद्धि का दीया क्यों जला रखा है? अबुध होने की ज़रूरत है। हम अबुध होकर बैठे हैं। हम ऐसा क्यों कहते हैं कि हम अबुध होकर बैठे हैं?

ये बुद्धि वाले तो कब बुद्धू बन जाएँगे, उसका ठिकाना नहीं। ये सभी बुद्धू बन गए। यह बुद्धि दादा को सौंप देनी है। गिरवी मत रखना, हमेशा के लिए सौंप देना।

यात्रा में प्रकृति का अनुभव

यात्रा में प्रकृति का तुझे ऐसा कोई अनुभव हुआ है?

प्रश्नकर्ता : हाँ। हुआ है न, दादा। नहाने के लिए पहले दौड़ना, यात्रा में ऐसा ज़्यादा दिखाई दिया।

दादाश्री : चढ़ने में, उतरने में सभी में वह स्वार्थी। उसके रंग-ढंग अलग ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : उसकी नज़र वहीं पर रहती है। उसका *लक्ष* (जागृति) वहीं पर रहता है।

दादाश्री : प्रकृति में वह भले ही हो, लेकिन उसे अच्छा लगता है इसलिए, अभी तक तो उसे इसकी खबर ही नहीं पड़ी है। यह तो जब मैंने समझाया तब। हर बार यह समझ में आना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा क्यों हो रहा है?' तब फिर जो हो जाता है, वह प्रकृति है। लेकिन आपको पता चलना चाहिए कि 'ऐसा क्यों हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए।'

प्रश्नकर्ता : तो वह प्रकृति है?

दादाश्री : हाँ, 'अभी तक भी नहाने में जल्दबाज़ी क्यों होती है? 'जल्दी खा लूँ' ऐसी जल्दबाज़ी क्यों होती है?' ऐसा सब भान रहना चाहिए। नहीं रहना चाहिए? तो उसका जो भान नहीं रहा, उस वजह से यह गलती हो गई है। अगर भान रहे, तो 'प्रकृति को हुआ,' ऐसा कहा जाएगा न! वह जैसी प्रकृति लाया है, उसी तरह प्रकृति खुल रही है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति दिखाई देती है लेकिन उसे मोड़ा नहीं जा सकता।

दादाश्री : तो फिर वह ज़रा ज़्यादा कहलाएगा। जब तक वह सुने नहीं तब तक उसके साथ यह सिलसिला जारी रखना पड़ेगा, बाद में वह कभी न कभी सुनेगी। जिसे प्रकृति जीतनी ही है, उसे हराने वाला कोई है ही नहीं।

यात्रा में खपती है प्रकृति

हर एक की अपनी प्रकृति होती है और यदि उस प्रकृति को खपाए तो भगवान बन जाएगा। अगर खुद की प्रकृति को खुद जाने तो भगवान बनने की शुरुआत हो जाएगी और फिर जानने के बाद समभाव से *निकाल* करके उसे खपा देगा। प्रकृति को देखेगा, क्या-क्या किसके साथ, चंदूभाई दूसरों के साथ क्या कर रहे हैं? उसे खुद देखेगा।

प्रकृति को देखते रहने को ही खपाना कहते हैं। व्यवहार में खपाना अर्थात् समभाव से खपाना। मन को विचलित नहीं होने दे। कषायों को मंद करके बैठे रहना और खपाते रहना, उसी को खपाना कहते हैं।

जिसे दूसरों के साथ अनुकूल होना आ जाता है, उसे कोई दुःख ही नहीं रहता। अत: 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! प्रत्येक के साथ 'एडजस्टमेन्ट' हो जाए, वही सब से बड़ा धर्म है। इस काल में तो भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ हैं तो फिर 'एडजस्ट' हुए बिना कैसे चलेगा?

लुटेरे मिल जाएँ, और उनके साथ 'डिसएडजस्ट' होंगे तो वे मारेंगे। उसके बजाय हम तय करें कि उनसे 'एडजस्ट' होकर काम लेना है। फिर उनसे पूछें कि, 'भाई, तेरी क्या इच्छा है? देख भाई, हम तो यात्रा पर निकले हैं।' इस प्रकार उनके साथ 'एडजस्ट' हो जाना है।

यदि हिसाब होगा तभी काटेंगे

प्रश्नकर्ता : हम जब यात्रा पर गए थे, तब आपके डिब्बे में तो कितने सारे खटमल थे!

दादाश्री : हाँ। फिर भी मुझे नहीं छू रहे थे। जितने लोग इन खटमलों को मारने की हिंसा करते हैं न, उन्हें जितने खटमलों ने काटा, उतने मुझे नहीं काटते। आपके बिस्तर पर खटमल रखने पर भी अगर वे आपको नहीं काटें तो समझना कि 'उनके साथ का अपना हिसाब चुक गया है।'

ये खटमल बेचारे समझदार हैं! ये हमारे ऊपर रेंगते हैं लेकिन काटते नहीं हैं क्योंकि जानते हैं कि ये मारेंगे नहीं।

यात्रा में टूटती हैं, गांठें सभी

प्रश्नकर्ता : दादा, जब हम यात्रा में जाते हैं तब यदि कोई हमें कहे कि ऐसा करना ठीक है, ऐसा करना ठीक नहीं है तो वह मुझे स्वीकार नहीं होता। इसलिए मना कर देता हूँ।

दादाश्री : वही कह रहा हूँ न, वह अपनी *आड़ाई* (टेढ़ापन) दिखाता है। जब वह *आड़ाई* निकल जाएगी, तब मोक्ष होगा। तब ये सारे भूत निकल जाएँगे और सरल हो जाएगा। एक तो, सरल हो जाना चाहिए और दूसरा, नम्र। सामने वाला थोड़ा सा झुके उससे पहले ही वह पूरा झुक जाए। और यदि कोई नहीं झुके और अकड़े तो उसके सामने भी वह झुक जाए। मनुष्य का स्वभाव कैसा है? यदि सामने वाला अकड़े, तो वह भी अकड़ता है लेकिन यदि वहाँ भी झुक जाए तो वह मोक्ष में जाने की निशानी कही जाएगी। फिर, निर्लोभता होती है। लोभ, उस लोभ ने ही लोगों को पकड़े रखा है न, किसने पकड़े रखा है मोक्ष में जाते हुए?

प्रश्नकर्ता : लोभ, ममता।

दादाश्री : इसलिए भगवान ने कहा था न, कि यात्रा करके आना, ऐसा कर आना और पैसे खर्च कर देना। पैसे खर्च करने से लोभ की गांठ कम हो जाएगी। वर्ना निन्यानवे के चक्कर में रोज़ रुपया डालता रहेगा। अत: ये सभी गुण आ जाने चाहिए।

लोभी की चाल को लोग समझ नहीं सकते। कृपालुदेव अच्छी तरह से समझ पाए। यहाँ तक कि यात्रा में जाने से लोभ की गांठ टूटती है। आपने पढ़ा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, क्योंकि तीर्थयात्रा में पैसे खर्च किए।

दादाश्री : यानी कि पैसे कम होते जाने से वह गांठ टूटती है। किसी भी तरह से आप इन से पैसे खर्च करवाओ।

प्रश्नकर्ता : यह कैसा ऑपरेशन कहलाएगा?

दादाश्री : किसी भी तरह से ऑपरेशन करके यह गांठ निकलवा देना। जो मानी है, उसे कोई ज़रूरत नहीं है। मानी को डाँटने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो मानी नहीं होता, वह बेशर्म हो चुका होता है, तब लोभ बहुत बढ़ गया होगा!

जितना हो सके उतना करना

प्रश्नकर्ता : जब हम यात्रा पर जाते हैं तो वहाँ जो भिखारी होते हैं, वे पैसे माँगते हैं तो उनमें से अस्सी प्रतिशत लोग हमें अच्छे दिखाई देते हैं, फिर भी वे पैसे माँगे तब हमें क्या करना चाहिए। पैसे दें या न दें या फिर कैसा भाव रखना चाहिए?

दादाश्री : कैसे लोग माँगते हैं?

प्रश्नकर्ता : सभी अच्छे दिखाई देते हैं। कपड़े अच्छे पहने होते हैं। सिगरेट पीता है। बेटी को (गोद में) लेकर स्त्री माँगती है और बेटी के पैर में तो चाँदी की पायल होती है, और जो स्त्री माँगती है वह अच्छे कपड़े पहने होती है।

दादाश्री : ऐसा है न, माँगने वाले बारह महीने में एक लाख नहीं आते। बहुत हुआ तो दस-बीस या पच्चीस आएँगे! उन्हें एक रुपये दे देना लेकिन उनका अपमान मत करना।

प्रश्नकर्ता : हाँ, बस। ऐसा नहीं कहना है कि 'आगे जाओ?'

दादाश्री : यदि लाख लोग आने वाले हों, तो हमें मना कर देना पड़ेगा। यदि ज़िंदगी भर का हिसाब निकालें न, तो भी बहुत हुए तो कहीं ऐसे पाँच-दस ही लोग होंगे। वह भी कोई हमेशा का नियम नहीं है। इसलिए निपटा देना। चार

आने देकर, आठ आने देकर या एक रुपया देकर भी उसे निपटा देना। और यदि नहीं देना हो तो उनमें शुद्धात्मा देखकर फिर मत देना लेकिन ऐसा बोलना ताकि उनका तिरस्कार न हो। नहीं देने में भी हर्ज नहीं है लेकिन कुछ कहना मत। उसके लिए तो उसके अहंकार की कीमत नहीं है लेकिन हमें तो अपने अहंकार की कीमत है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : यदि हम दे दें और वह गलत तरह से उसका उपयोग करे तो हमें उसका दोष लगेगा क्या?

दादाश्री : हमें ऐसा कुछ नहीं है। देने के बाद फिर वह दारू पिए या कुछ भी करे। अपना हेतु वह नहीं है, अपना हेतु तो उसे दु:ख से मुक्त करने का है।

प्रश्नकर्ता : जब यात्रा में जाते हैं न, तब ऐसा बहुत होता है और ज़्यादातर क्या होता है कि चिल्लर पैसे नहीं होते इसलिए परेशानी हो जाती है।

दादाश्री : उसे रुपया दे देना...

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, रुपया भी खुला नहीं होता। कोई रुपया भी खुला नहीं देता। दस-दस या पाँच के नोट के अलावा अब कोई नोट भी नहीं देता।

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। जितना हो सका उतना तो किया और यदि नहीं हो पाया तो कोई बात नहीं। अपने यहाँ ऐसा कोई नियम नहीं है कि देना ही चाहिए। और यदि अंदर से ऐसा भी हो जाए कि नहीं-नहीं, पाँच दे दूँ, तो पाँच दे देना। उसमें देर मत करना।

एक कम करने के बजाय दूसरे दस ले आया

अब, यात्रा के लिए कबीर साहब ने लिखा है,

तीरथ चला नहाने को, मन मेला चित्त चोर,
एकहु पाप न उतरा, लाया मन दस और।

क्या कहते हैं? तीर्थ में नहाने के लिए अर्थात् वहाँ गंगा जी में नहाएँगे तो पवित्र हो जाएँगे, मेरे पाप धुल जाएँगे इसलिए तीर्थ आया। वह तीर्थ में नहाया तो सही लेकिन नहाते समय पंडित (ब्राह्मण) से झगड़ा किया, इससे झगड़ा किया, नाव वाले से झगड़ा किया और बल्कि दस पाप घर ले आया। एक पाप तो कम नहीं किया लेकिन दूसरे दस पाप घर ले आया। ऐसी अपने हिन्दुस्तान की स्थिति है! अपने यहाँ सभी यात्रा करने जाते हैं न, तो घर पर दस पाप लेकर आते हैं। इसलिए सिर्फ कबीर साहब ने ही (लोगों को) यह जागृति दी है कि, 'अरे भाई, आप ऐसी यात्रा में क्यों जाते हो? यदि आपको दस पाप लेकर आना हो तो ऐसी यात्रा में मत जाना और यदि यात्रा में जाओगे तो मन में समाधान रखना कि भाई, यह दस दिन या एक महीने की यात्रा है, वहाँ पर हमें समझदारी से रहना है।' भले ही संसार में दखलंदाज़ी करेंगे लेकिन यहाँ नहीं करनी है। परंतु यात्रा में तो लोग पंडितों को मारकर भी आते हैं।

हम जहाँ कहीं भी यात्रा करने जाएँ वहाँ हमें ऐसा भाव रखना चाहिए कि किसी को दु:ख न पहुँचे। और वहाँ के नियमों का पालन करना चाहिए।

टकराव को भी हम देखते हैं

हम सभी पैंतीस लोग बस लेकर चालीस दिन की यात्रा करने गए थे। वहाँ भी हमारा तो नो लॉ (कोई नियम नहीं)। तब फिर ऐसा भी नहीं कि किसी से लड़ना नहीं है। जिससे भी लड़ना हो, उससे लड़ने की छूट। लड़ने की छूट देनी है, ऐसा भी नहीं और नहीं देनी है, ऐसा भी नहीं। यदि वे लड़ते हैं तो 'हम' देखते हैं।

प्रश्नकर्ता : लड़ने की ऐसी छूट तो सभी लोगों को चाहिए।

दादाश्री : लड़ने की छूट दी थी। क्योंकि सभी से कह दिया था कि नो लॉ, लॉ है इसलिए जितना लड़ना हो उतना लड़ना। जो माल भरा होगा, लड़ने से वह निकल जाएगा। और आमने-सामने लड़ने से यह पता चल जाएगा कि मुझमें अभी भी यह कमज़ोरी है। उसके बाद प्रतिक्रमण करने से शक्ति बढ़ जाती है। सभी बहुत लड़ते थे, नहीं?

प्रश्नकर्ता : धड़ाधड़ भी हो जाती थी, फटाके भी फूटते थे। लेकिन यदि फटाके नहीं फूटेंगे तो दिवाली कैसे मनेगी?

दादाश्री : फिर प्रतिक्रमण भी इतने अच्छे करते थे कि कोई अद्‌भुत शक्ति उत्पन्न हो जाती थी! लड़े बगैर वे किसका प्रतिक्रमण करेंगे भला? यह तो हमारी अनंत जन्मों की पहचान है इसलिए आज प्रतिक्रमण करने से फायदा होता है।

अपनी यात्रा में औरंगाबाद वाले और बड़ौदा वाले दोनों साथ में आ रहे थे। अब सुबह जिस दूध की चाय बनानी है, उसी दूध में दोनों नमक डाल रहे थे। लेकिन दूसरे दिन सुबह चाय बनाते तो फर्स्ट क्लास चाय बन जाती थी। तब मैंने कहा, यह तो आश्चर्य है! सुबह वापस सभी एक ही हो जाते थे। वह कैसा था, दोपहर को लड़ना और शाम को आरती करते समय एक? किसी को यों ही लगे कि ये अभी बस में से उतर जाएँगे।

यात्रा में जब दो लोग झगड़ें तब हमारे भीतर यों ही रहता कि हम ज्ञाता-द्रष्टा हैं और बाहर जगत् ऐसा ही रहेगा। एक को मनाने जाएँ और दूसरे को शांत करने जाएँ तो दोनों का बिगड़ेगा। उसके बजाय दोनों लड़ो न, भाई। हम देखते रहते हैं। हम अवस्था को देखते हैं। यात्रा में चाहे कैसी भी अवस्था आए फिर भी हम एकाकार नहीं होते। हम अवस्था को ठहरने नहीं देते। यदि तीन मिनट के लिए भी रहने देंगे तो सभी की लाइन लग जाएगी। समझ में आ रहा न यह? अपने महात्माओं को वीतरागता रहती है, लेकिन दरअसल नहीं रहती।

कुछ तो हज़बेन्ड-वाइफ लड़ते हैं। यदि मैं बुद्धि का उपयोग करूँ तो मेरी क्या दशा होगी? इस बहन से क्यों लड़ रहा था? इस तरह से चल पड़ेगा सब। जबकि मैं तो उस ज्ञान को जानता हूँ कि वे किस कारण से लड़ रहे हैं? वे किस कारण से, क्या कर रहे हैं, वह सब जानता हूँ। फिर हम कैसे कह सकते हैं कि तुम क्यों लड़े?

चालीस दिनों की यात्रा के प्रतिक्रमण

जब चालीस दिनों की यात्रा में गए थे न, तब मैंने सभी से कहा था कि रोज़ एक बार प्रतिक्रमण करना। वे सभी कहने लगे, दो बार का करो तो दो बार का किया।

रात को फिर सभी 'हमारी' साक्षी में प्रतिक्रमण करके धो देते थे! आमने-सामने दाग़ लगते थे और फिर सभी धो देते थे! यह प्योर 'वीतराग मार्ग' है, इसलिए यहाँ कैश-नकद प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। इसमें पाक्षिक या मासिक प्रतिक्रमण नहीं हो सकते। दोष होते ही तुरंत प्रतिक्रमण।

यह जो प्रतिक्रमण है न, यह तो अपवाद है। इस अक्रम जैसा! ऐसे प्रतिक्रमण नहीं होते और यदि हो गए, तो उसका तो काम ही *निकल* जाएगा। ये तो शायद एक या दो दिनों के होंगे। लेकिन देखो उन दिनों, वहाँ चालीस दिन की यात्रा में तो कितने सारे हुए थे? फिर उनकी शक्तियाँ बहुत बढ़ जाती हैं। आत्मा की पुष्टि हो जाती है। आत्मा सहज होता जाता है, आत्मा पुष्ट होता

जाता है। आत्मा शक्ति वाला ही है लेकिन ऐसा कहा जाएगा कि जितनी सहजता उत्पन्न होती है, उतनी ही शक्ति बढ़ती जाती है।

यात्रा में किसी प्रकार का भेद या जुदाई देखने को नहीं मिलती

यहाँ पर किसी को बुरा नहीं लगता क्योंकि ये सभी समभाव से *निकाल* करने वाले महात्मा हैं और दस-बारह वर्ष से ये महात्मा यहीं पर हैं। लेकिन सभी का एक ही मत और एक ही अभिप्राय है, उनमें कभी भी मतभेद ही नहीं होता। यात्रा में जाएँ तो भी एक भी मतभेद नहीं। चालीस दिनों की यात्रा में एक क्षण के लिए भी यों मतभेद नहीं हुआ। सभी अपने ही लगते। भेद उत्पन्न ही नहीं होता। मतभेद जैसी कोई बात ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : यदि थर्मामीटर टूटने पर उसके अंदर का पारा टूट जाता है लेकिन यदि उसे वापस इकट्ठा किया जाए तो वह एक हो जाता है।

दादाश्री : वापस एक हो जाता है। इसलिए यह विशेष ज्ञान ऐसा है न, जब तक मेरी हाज़िरी है न, तब तक सभी को छूट दी है कि हमारे यहाँ नियम वगैरह नहीं है। पूरे वर्ल्ड में सभी जगह लॉ होते हैं, जैसे कि आपको यहाँ इस तरह से बैठना है। इतने बजे आना है। यहाँ पर वैसा नो लॉ। कोई लॉ नहीं। यदि लॉ होगा तो संकल्प-विकल्प करवाएगा। यहाँ पर ये सभी बातें लॉ बगैर की हैं! इसलिए जब वहाँ बस से यात्रा करने गए थे न, तब चालीस दिन रहे थे लेकिन कोई लॉ नहीं। वहाँ लड़ने की भी छूट थी। यदि लड़ पड़ते तो वह भी हम देखते रहते थे, बस। वे दोनों झगड़ते, वह यों करता, वह यों करता, वह सब देखते रहते थे। और रात को फिर वापस सभी धो डालते थे। हमारी हाज़िरी में कृपा प्राप्त करके धोने से अगले दिन वापस सभी को एकता लगती थी! अगले दिन सभी में संपूर्ण रूप से एकता रहती थी।

यात्रा में सभी महात्माओं को, चालीस लोगों को भोजन करने बुलाया था। उन्हें भोजन करते समय भी ऐसी एकता रहती थी कि किसी को पता ही नहीं चलता था। ऐसा ही लगता था कि यह एक ही व्यक्ति भोजन कर रहा है जबकि भोजन करने वाले तो चालीस लोग थे। घर के मालिक को भी पता नहीं चलता था कि किस तरह परोसा गया, किस तरह से हुआ! यह अद्‌भुत है! हर बात अद्‌भुत है! वर्तन से लेकर ठेठ तक अद्‌भुत है, यह आश्चर्य है! इस आश्चर्य में अपना काम हो गया।

अपने संघ की प्योरिटी

एक महात्मा कहने लगे, 'मुझे पूरे संघ को अपने पैसों से ले जाना है।' मैंने मना कर दिया। मैंने कहा, ऐसा तूफान मत करना। अभी तो बहुत से काम करने बाकी हैं। सभी अपने-अपने पैसे लेकर आएँगे, हज़ार-हज़ार या पंद्रह सौ रुपये। अगर अभी ही सारा खर्च कर दोगे और बाद में ज़रूरत पड़ेगी तो? बहुत उछल-कूद मत करना। धर्म के मामले में तरीके से रहना। क्योंकि अभी आपको व्यवहार में रहना है। अभी सब खत्म नहीं हो गया है। वह तो, धीरे-धीरे ठीक है।

यहाँ किसी के चार आने का भी गुप्त रूप से उपयोग नहीं होता। संघ के पैसे उसी में जाएँगे। घर में सभी लोग खुद के पैसों से ही सब करते हैं। वह फिर चाहे संघपति हों या नीरू बहन हों, वे संघ का कुछ भी उपयोग नहीं करते न! हर कोई खुद के पैसों से अपना खर्च चलाता है। इस संघ में, किसी भी प्रकार की प्राइवेसी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : प्राइवेसी नहीं।

दादाश्री : कोई नियम नहीं, नो लॉ-लॉ। किसी भी प्रकार का नियम नहीं है। भले ही पचास हज़ार लोग इकट्ठे हों, लेकिन कोई नियम नहीं।

'आप ऐसे क्यों बैठे हो?' यहाँ कोई ऐसा नहीं कहता। जबकि दूसरी जगह पर तो यदि सत्संग में बैठे हुए हों, तो वे ऐसा करवाते हैं।

बचपन में मैं ही एक जगह गया था। तो मैंने ज़रा यों पैर ऊपर किया न, तो वे मुझे 'ऐ-ऐ' करने लगे। मैंने कहा, 'अब दोबारा नहीं आऊँगा।' फिर उस दिन तो उनके कहे अनुसार ही किया। सिर्फ यही एक संघ नियम बगैर का है, बिल्कुल भी नियम नहीं। नो लॉ-लॉ। लॉ कौन सा? तब यह कि, नो लॉ-लॉ, सबकुछ साहजिक।

अपने महात्माओं जैसे लोग कहीं देखने को नहीं मिलेंगे

जब हम पाँच सौ लोगों के साथ यात्रा करने गए थे न, तब उनमें से सिर्फ एक ही कहने वाला मिला। इतने गाँवों में गए लेकिन एक भी गाँव में कोई कहने वाला नहीं मिला। क्योंकि सभी अपने-अपने काम में लगे थे, सभी लोग अपनी-अपनी परेशानियों में हैं, किसी के बारे में कुछ पता ही नहीं लगाते कि क्या है और क्या नहीं? कोई भी पता नहीं लगता। लेकिन एक स्थिरता वाला व्यक्ति मिला। वे तलाजा में मुनि थे, वे मुझ से कहने लगे 'साहब, ये पाँच सौ लोग यात्रा में आए हैं लेकिन कोई बखेड़ा नहीं, दखल नहीं, शोरगुल नहीं, हड़बड़ी नहीं, तूफान नहीं। जबकि हमारे यहाँ तो रोज़ पचास ही लोग आते हैं तो झंझट, तूफान और झगड़ा हो जाता है। आपका यह कैसा है? मैंने कहा 'इसे सिर्फ आप अकेले ही समझ पाए हो, बाकी हम सभी जगह जाकर आए लेकिन कोई भी नहीं समझ पाया।' और कोई ऐसा खुलासा भी नहीं करता। क्योंकि जहाँ पाँच सौ लोग हों वहाँ झंझट होने में समय ही नहीं लगता। सभी कितनी शांति से निकाल कर रहे हैं! ढाई सौ थालियाँ हों और भोजन करने वाले पाँच सौ लोग हों तब भी ये सभी भोजन कर सकते हैं। यदि डेढ़ सौ लोगों का भोजन बनाया हो न तो भी ये पाँच सौ लोग भोजन कर सकते हैं। अत: इन पाँच सौ महात्माओं की तो बात क्या! इस दुनिया में ऐसे लोग देखने को ही नहीं मिलेंगे कि जिन्हें जैसे मोड़ना हो वैसे मुड़ जाते हैं। जैसे ढालना हो वैसे ढल जाते हैं।

यात्रा का आनंद ऐसा, मानो निरंतर मोक्ष

यहाँ से पचास लोगों को लेकर तीन दिन की यात्रा के लिए बस से लोनावला गए थे। बस में दो-तीन लोग मुझ से कहने लगे, 'ऐसा आनंद कभी भी नहीं देखा!' तब मैंने पूछा 'क्या ऐसा लग रहा है कि मानो मोक्ष में से आए हो?' तब कहने लगे, 'हाँ, मानो कि मोक्ष में से घूमने आए हों, ऐसा लगता है। ये तीनों दिन ऐसे बीते!' वहाँ यात्रा में आपको कुछ मज़ा आया था?

प्रश्नकर्ता : बहुत मज़ा आया था।

दादाश्री : यात्रा करवाने वालों को भी धन्य हैं और वह यात्रा भी कैसी हुई! नहीं? पचास लोग यों आराम से, मानो कि यों तीन दिन मोक्ष में से यहाँ घूमने नहीं आए हों। यों निरंतर मोक्ष! खाते-पीते, खाना-पीना सब, लेकिन निरंतर मोक्ष ही।

यात्रा में ज्ञानी के साथ रहने में सही मज़ा

प्रश्नकर्ता : दादा के साथ यात्रा करना बहुत यूनिक है, हाँ।

दादाश्री : अभी यदि तीन हज़ार लोग मेरे साथ आएँ न, तो सभी एकदम से रोड पर कुछ भी बिछाए बगैर बैठ जाएँगे। यदि सो जाने को कहें तो सभी सो जाएँगे। इसीलिए तो दुनिया को यह अद्भुत लगता है न, कि ये किस प्रकार के लोग हैं? और फिर वे बड़े-बड़े पैसे वाले लोग, भले ही वे पैसों से नहीं पहचाने जाएँ लेकिन उनके चेहरे से तो पहचाने जा सकते हैं न, कि भाई, ये

तो कुछ अलग ही प्रकार के लोग हैं। चेहरे से पता चल जाता है या नहीं? नहीं चलता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, चलता है, चलता है।

दादाश्री : कि ये लोग नीचे सोने वालों में से नहीं हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : इसलिए लोगों के लिए यह अद्‌भुत ही है न! यह तो, यदि मैं दो-तीन सौ लोगों को लेकर अमरीका आया होऊँ और मज़ाक करना हो, तो उन्हें रिगन (उस समय के यू.एस.ए. के प्रेसिडेन्ट) के ऑफिस में बिठा दूँ तो फिर पुलिस वाले उन लोगों को वहाँ से बाहर निकाल देंगे। बाहर आ कर फिर वापस अंदर जाना। वे निकालेंगे और वे वापस अंदर जाएँगे। जिन्हें अपमान नहीं, मान नहीं, जिन्हें जेल में डालने पर भी हर्ज नहीं, और क्या जेल में डालने की सत्ता उनके हाथ में है? वह व्यवस्थित के ताबे में है। इसलिए वे खुद ही ऊब जाते हैं कि यह किस तरह की क्वॉलिटी है? इनका क्या करें? ये हिंसक नहीं हैं, इन्हें कुछ चाहिए नहीं, फिर भी ये गुंडे नहीं हैं और बेशर्म भी नहीं हैं! वापस आ जाते हैं फिर भी बेशर्म नहीं है। फिर तो वे उलझन में ही पड़ जाएँगे न! कि यह समूह कुछ अलग प्रकार का है। पंद्रह हज़ार लोग तो आज्ञा में रहते होंगे, उनमें से पाँच हज़ार लोग तो निरंतर आज्ञा में रहने वाले हैं, कैसे? निरंतर, एक क्षण भी चूके बगैर! अब, इन आज्ञा में रहने वाले लोगों के साथ रहने में कितना मज़ा आएगा! और हर साल होगी, यात्रा वगैरह सबकुछ होगी।

ज्ञानी का परिचय, वही मुख्य हेतु

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके साथ यात्रा करने का क्या महत्व है और वह भी खास तौर पर दादा के साथ?

दादाश्री : वह तो, हमेशा साथ में रहते हैं। साथ में रहने को मिलता है लेकिन घर से मुक्त रहते हैं। यानी कि परिग्रह के बिना अर्थात् साधुपना। और फिर दादा साथ में रहते हैं। साधुपने का ऐसा लाभ मिलता है। घर से मुक्त हुए और बात करने वाली कोई फाइल न हो और यदि यात्रा में हमें यों बैठे रहना हो तब भी कोई नहीं पूछता न?

प्रश्नकर्ता : कोई नहीं पूछता।

दादाश्री : जबकि घर में तो यदि ऐसे बैठे हुए हों तो बच्ची कहेगी, 'दादा, दादा, चलो।' नहीं कहेगी, वह बच्ची?

प्रश्नकर्ता : अत: जब दादा साथ में होंगे तभी फर्क पड़ेगा न? यदि दादाजी साथ में हों तभी यात्रा का फायदा है न?

दादाश्री : तभी मज़ा आएगा, तभी उसका आनंद आएगा न, यात्रा का?

प्रश्नकर्ता : तभी आनंद आता है। अकेले जाने में तो कोई मज़ा ही नहीं न!

दादाश्री : कोई मज़ा नहीं।

प्रश्नकर्ता : कोई मज़ा नहीं। लेकिन अब यात्रा में भी दादाजी से बहुत संपर्क नहीं रहता, क्योंकि बहुत से लोग रहते हैं। सिर्फ इतना ही रहता है कि दादाजी साथ में हैं।

दादाश्री: नहीं, वह सब तो रहता है, संपर्क रहता है।

प्रश्नकर्ता : रहता है?

दादाश्री : एक सौ पंद्रह लोगों को ले गए थे न तब भी सभी से संपर्क था।

प्रश्नकर्ता : एक सौ पंद्रह लोगों को?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस बार तो पाँच सौ की बात थी न?

दादाश्री : हाँ, पाँच सौ की बात।

प्रश्नकर्ता : और अब तो और भी ज़्यादा बढ़ाने की बात है न?

दादाश्री : हाँ, बहुत हो गया। अपने साथ हैं...

प्रश्नकर्ता : दादाजी हैं। हाँ, हाँ।

दादाश्री : बस, तो फिर झंझट नहीं।

प्रश्नकर्ता : हम सभी, हर जगह यात्रा करने जाते हैं, वहाँ तो दादाजी रहते हैं न?

दादाश्री : हाँ। मेरे साथ घूमे तों कोई गुनाह ही नहीं और इसीलिए हम सभी को लाभ देते थे कि यदि हमारे साथ एक-डेढ़ महीने रहे तो बहुत हो गया! यह इनका वातावरण कहलाता है। क्या! जो ट्रान्सपरन्ट हैं, वहाँ पर अपना मन ऑल राइट हो जाता है। ट्रान्सपरन्ट होने की ज़रूरत है।

ज्ञानी की हाज़िरी से मिलती है पुष्टि आत्मा को

यात्रा में भले ही, जगह वही की वही हो लेकिन यात्रा का महत्व तो यह है कि हमारे साथ तीस दिनों तक रहने को मिलता है। पीतल कभी सोना नहीं बन सकता। ज्ञानी पुरुष का वातावरण तो बहुत ही उच्च प्रकार का कहलाता है।

यह तो सभी के लिए है, सभी को हेल्प होती है। (यात्रा में) मैं साथ में रहूँ तभी सब को यात्रा अच्छी लगती है, वर्ना अच्छी ही नहीं लगेगी न! वर्ना यात्रा में जाएँगे ही नहीं न! इसलिए मेरी उपस्थिति चाहते हैं लोग, हर कहीं। और यह तो पब्लिक ट्रस्ट बन चुका है, अत: सभी जगह काम का ही है! हाँ और फिर कोई हर्ज ही नहीं रहा न! जहाँ ले जाओ, वही सही। और उपस्थिति से फायदा भी बहुत होता है न! पुष्टि मिल जाती है न! एक मिनट का वातावरण भी बहुत पुष्टि देता है! बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है, सिर्फ यह वातावरण ही हो, तब भी बहुत पुष्टि देता है।

इसमें दर्शन करने का हेतु तो है ही लेकिन यदि साथ में दादा हों न तो रात-दिन ज्ञानी पुरुष का परिचय मिले, पूरा वह हेतु है। इस यात्रा का मुख्य हेतु क्या है? मुख्य हेतु यही है। और फिर दिन भर कोई विचार वगैरह नहीं आते और संसार बंद हो चुका होता है! इसलिए उस समय आत्मा को पुष्टि मिलती है। अंदर पुष्टि मिलती है। उसके आसपास का वातावरण तो छूट गया न! आत्मा तो पूर्ण शक्ति वान है, अनंत शक्तिवान है लेकिन जैसे-जैसे वह आवरण टूटता जाता है वैसे-वैसे पुष्टि मिलती जाती है। पुष्टि अर्थात् क्या? आवरण टूट जाना, सारा हल आ जाना। अशांति व अज्ञानता का निबेड़ा आ जाता है। अब आवरणों का निबेड़ा आ जाना चाहिए।

महाविदेह की यात्रा

प्रश्नकर्ता : दादा, यह जो महाविदेह क्षेत्र है, वहाँ इन सभी महात्माओं को यात्रा करवाने नहीं ले जा सकते?

दादाश्री : कहाँ?

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में।

दादाश्री : वह तो, जब आपका स्वभाव बदल जाएगा तब वह क्षेत्र आपको खींच लेगा। इसलिए उसके लायक बन जाओ। जैसे कि पाँचवीं क्लास के लायक विद्यार्थी यदि फोर्थ में हो, तो उसे पाँचवीं क्लास खींच ही लेती है। उसी तरह से क्षेत्र का स्वभाव ही है खींच लेने का। इसलिए आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। मेरी आज्ञा के अनुसार चलो न, आपके लिए...

प्रश्नकर्ता : ये सभी क्षेत्र यहीं पर हैं।

दादाश्री : सभी क्षेत्र यहीं पर हैं, सच कह रहे हो। सभी क्षेत्र यहीं पर हैं, इतना जिसे समझ में आ गया न, उसका निबेड़ा आ जाएगा।

दादा के दर्शन में समाएँ सारे तीर्थ

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा कहा गया है कि हिन्दुस्तान में जितने भी तीर्थ हैं उन सभी तीर्थों की यात्रा की जाए तो उस यात्रा (के फल) से भी ज़्यादा फल, आपके पास बैठकर आपके दर्शन करने से और आपकी वाणी सुनने से मिलता है।

दादाश्री : जितनी समझ होगी उतना ही लाभ उठाएगा। हमें तो ऐसा कुछ है नहीं कि लाभ लेना है या देना है। जिस तरह मछली तड़पती है न, उसी तरह सारा संसार तड़प रहा है। साधु-संन्यासी, बावा-बावी, सभी मछली की तरह तड़प रहे हैं। वह सब मुझे दिखाई देता है। लेकिन क्या करूँ? हमारी तो ऐसी भावना है कि 'जो सुख हमने पाया है वही सुख संसार पाए।' बाकी सभी जो थे, वे वीतराग थे। हम खटपटिया वीतराग हैं! खटपट सिर्फ इतनी ही है कि हमारे जैसा सुख पाओ। सभी को प्राप्ति करवाने के बाद जाऊँ।

यदि ज्ञानी के साथ घूमे तो 'प्रूफ' हो गए

प्रश्नकर्ता : इस बीच, मैं बीस दिन की यात्रा करने गया था और इससे शायद बीस दिन पहले ही चला गया था, बस। मैं डेढ़ महीने ही दादाजी से अलग रहा।

दादाश्री : शास्त्रकार ऐसा कहते हैं कि यदि छः महीने आप ज्ञानी के साथ घूमो, तो 'प्रुफ' हो जाओगे, सिर्फ छः महीने ही!

आप कितने महीनों से पीछे घूम रहे हों?

प्रश्नकर्ता : दो-चार दिन, सिर्फ, दो-चार दिन के लिए जाता हूँ और वापस दादा के साथ। लगातार छः महीने चाहिए या टुकड़ों में चलेगा?

दादाश्री : अब यदि महीने-डेढ़ महीने की छूट्टी ली हो, तो उसमें हर्ज नहीं है। आपने जो छुट्टी ली है न, उसकी बात कर रहा हूँ। लेकिन यदि अभी पंद्रह दिन, फिर दो साल बाद वापस पंद्रह दिन तो ऐसा नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वैसा नहीं।

दादाश्री : वह सब *आटालूण* (रोटी बनाने के लिए काम आने वाला सूखा आटा) में चला जाएगा। *आटालूण* समझ गए न आप?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है। *आटालूण* जैसा हो जाएगा।

दादाश्री : दो दिनों के लिए आए, वे भी बेकार जाएँगे... और जाते समय दो बार...

प्रश्नकर्ता : उसकी रोटी भी नहीं बन सकती। *आटालूण* हो जाएगा।

दादाश्री : भाखरी बनेगी। यदि रोटी नहीं बन सकती तो भरवां पराठा तो बन ही नहीं सकता न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, नहीं बन सकती। भरवां पराठा तो कैसे बन सकेगा?

ज्ञानी पुरुष का सानिध्य तीन सौ घंटा का

प्रश्नकर्ता : यदि हम आपके वातावरण में, सत्संग में, सानिध्य में रहें तो क्या हमारा अहंकार जल्दी खत्म हो जाएगा?

दादाश्री : अहंकार खत्म नहीं करना है, अहंकार तो खत्म हो ही चुका है। अब आप में यह डिस्चार्ज अहंकार बाकी रहा है। अब, सत्संग से आपकी समझ बढ़ती जाएगी, दर्शन खुलता जाएगा, अनवेइल्ड अनावरण होता जाएगा। हाँ, उसके लिए आपको हमारे सानिध्य में रहना पड़ेगा। तीन सौ घंटे। थ्री हंड्रेड अवर्स रहोगे तो पूर्ण हो जाएगा। फुल मून!

'ज्ञानी पुरुष' के पास सत्संग सुनने से दृष्टि धीरे-धीरे बदलती है। अभी आप सुन रहे हो तो इससे आपकी दृष्टि थोड़ी-थोड़ी बदलती है। ऐसे

करते-करते जब कुछ परिचय हो जाएगा, एकाध महीने का, दो महीनों का तो दृष्टि बदल जाएगी है।

यदि 'ज्ञानी' की दृष्टि से दृष्टि मिल जाए तो बात बन गई। इसलिए 'ज्ञानी' के पास, उनके परिचय में रहना पड़ता है।

ज्ञानी के पास बैठने से ही परिवर्तन

प्रश्नकर्ता : आपके पास छः महीने बैठने पर स्थूल परिवर्तन होता है, उसके बाद सूक्ष्म में परिवर्तन होता है। ऐसा आपका कहना है?

दादाश्री : हाँ, सिर्फ बैठने से ही परिवर्तन होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : स्थूल परिवर्तन यानी क्या?

दादाश्री : स्थूल परिवर्तन अर्थात् बाहर की सारी मुश्किलें समाप्त हो गईं, सिर्फ अंदर की रही। फिर आगे भी यदि उतना ही सत्संग होता रहे तो अंदर की मुश्किलें भी समाप्त हो जाएँगी। दोनों के खत्म होने पर, हो जाएगा संपूर्ण। इसलिए यह परिचय रखना चाहिए। दो घंटे, तीन घंटे, पाँच घंटे, जितने जमा किए उतना लाभ। ज्ञान मिलने के बाद लोग, ऐसा समझ लेते हैं कि अब हमें कोई काम करने का रहा ही नहीं है। मगर अभी परिवर्तन तो हुआ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पूर्णपद की प्राप्ति के लिए महात्माओं को क्या गरज़ रखनी चाहिए?

दादाश्री : जितना हो सके उतना जीवन 'दादा' के पास रहकर गुज़ारना बस यही गरज़, दूसरी कोई गरज़ नहीं। रात-दिन कहीं भी, मगर 'दादा' के पास ही रहना। उनकी विसिनिटी में (दृष्टि में) रहना।

मेरे साथ घूमने से काम स्पीडली होगा

दादाजी से मिलने का तो सिर्फ, यही कारण है कि स्पीडी, जल्दी से हल आ जाए। मेरे साथ छः महीने घूमे तो काम हो जाएगा न? उसका काम स्पीडी (जल्दी से) हो जाता है। सत्संग से सारे कर्म ढीले पड़ जाते हैं। ढीले पड़ने से आज्ञापालन में सरलता रहती है।

अभी तक आपका और मेरा कितने घंटों का परिचय है, बताओ? मूलतः यह सारा लोक परिचय है, इसमें रहकर मोक्षमार्ग प्राप्त करने के लिए सारी ज़िंदगी लगाते थे। लेकिन यहाँ तो नकद मोक्ष मिलता है, उसके लिए टाइम निकालना है। वह क्रमिक मोक्षमार्ग, उसमें तो फिर आगे जाकर भटक सकता है, फिर भी उसके लिए पूरा जीवन निकाल देते थे। तो क्या इसके लिए परिचय नहीं चाहिए?

ज्ञान मिला इसका अर्थ यह हुआ कि हम लोक परिचय से मुक्त हो गए। फिर भी हमारी ऐसी स्ट्रोंग (प्रबल) भावना होनी चाहिए कि 'ज्ञानी का परिचय मिलना ही चाहिए।' निरंतर, आते-जाते कभी भी, जितना यह परिचय, उतना लाभ।

मेरे साथ आपका यह जो परिचय हुआ है न, उसी से बहुत लाभ हो गया। इसे अपूर्व लाभ कहा जाता है। जो कभी सुना न हो, ऐसा लाभ कहलाता है, यह।

ज्ञानी के परिचय से उन जैसे बन जाते हैं

प्रश्नकर्ता : आपकी उपस्थिति में विशेष शांति का अनुभव होता है।

दादाश्री : इस उपस्थिति की तो बात ही अलग है न! मेरी उपस्थिति आपको दिखाई देती है, लेकिन मुझे जिसकी उपस्थिति दिखाई देती है, वह उपस्थिति आपको भी बरतती है। चौदह लोकों के नाथ, जहाँ पूरे ब्रह्मांड का नाथ अंदर प्रकट हो गया है, उसका लाभ मुझे भी मिलता है और आपको भी मिलता है। इतनी नज़दीकी होनी चाहिए, बस। जितना नज़दीक उतना ही लाभ और आसपास का वातावरण तो अच्छा रहता ही है। उसमें भी फिर वातावरण में बदलाव! लेकिन

नज़दीकी का लाभ मिलना और वह भी फिर समझकर। समझे बिना लाभ नहीं है।

'ज्ञानी पुरुष' के पास निराकुल आनंद उत्पन्न होता है। *पुद्गल* से कोई लेना-देना है नहीं, तो फिर यह सुख कहाँ से उत्पन्न हुआ? तब कहते हैं कि वह स्वाभाविक सुख, सहज सुख उत्पन्न हुआ, वही आत्मा का सुख है। जिसको जितना समझ में आएगा, उतना ही वह सहज सुख के स्व-पद में रहेगा। फिर धीरे-धीरे वह परिपूर्ण होगा। जिसका परिचय रखते हैं, उन्हीं जैसे बन जाते हैं।

आत्महेतु के लिए सम्मेत शिखर यात्रा

प्रश्नकर्ता : कुछ लोग घूमने के लिए अमरीका जाते हैं। वह भी यात्रा ही कहलाएगी न।

दादाश्री : नहीं, वह यात्रा नहीं कही जाएगी! वह यात्रा नहीं, वह ट्रैवलिंग कही जाएगी। यात्रा तो उसे कहते हैं कि जो आत्महेतु के लिए या भक्ति हेतु के लिए हो! हेतु, भक्ति का होना चाहिए वह यात्रा कहलाती है। वहाँ पर लक्ष्मी कमाने का हेतु नहीं होना चाहिए। हम सम्मेत शिखर जाते हैं, वह क्या कुछ कमाने के लिए जाते हैं? वह यात्रा का हेतु कहा जाएगा। यात्रा में तो अपना संघ भी जाता है। ये संघपति कह रहे थे कि पूरी स्पेशल ट्रेन लेकर जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वे कह रहे थे। सम्मेत शिखर की यात्रा।

दादाश्री : सम्मेत शिखर की यात्रा। दीपावली के बाद ले जाने के लिए पीछे पड़े हैं। दीपावली के बाद हमारी जन्म जयंती मनाई जाएगी न, उसके बाद ले जाने की भावना है उनकी।

प्रश्नकर्ता : होगा, दादा।

दादाश्री : वह तो, यदि अभी योजना बनाएँगे, तो यदि व्यवस्थित में होगा तभी हो पाएगा, वर्ना नहीं हो पाएगा। उसमें कोई हर्ज नहीं है। हमें योजना बनानी चाहिए।

दादा देते हैं, बोगी में दर्शन

तीन-चार साल पहले हम यात्रा पर गए थे। वह यात्रा दुनिया में अलग ही प्रकार की थी!

प्रश्नकर्ता : हाँ, सम्मेत शिखर की यात्रा में।

दादाश्री : पूरी दुनिया में ऐसा समूह नहीं हो सकता। अपने एक सौ पंद्रह महात्मा थे, इसलिए दो-दो बोगी में यात्रा निकली। सभी जगह यात्रा करते-करते लगभग एक महीना बीत गया। अपने वे एक सौ पंद्रह महात्मा हो और वहाँ हर दिन का भोजन वगैरह सबकुछ बोगी में था। अंत तक चाय-नाश्ता चलता रहता था। और दादा वहाँ दो बार आरामसे दर्शन देते थे! वे बोगी में घूमते रहते थे और जब गाड़ी चलती तब वे यों ही नहीं बैठे रहते थे। वैसे तो सभी के लिए बैठक व्यवस्था अच्छी थी। बैठने का एकदम अच्छा था लेकिन यदि बैठा ही रहे तो भी इंसान ऊब जाता है! तो जब कोई बड़ा स्टेशन आता, उस स्टेशन पर बीस-पच्चीस मिनट गाड़ी खड़ी रहती, जब ऐसा स्टेशन आता था तब सभी नीचे उतर जाते थे। मैं सेन्टर में बैठ जाता था और वे लोग मेरे चारो ओर (घूमते हुए) गरबा गाते थे। हर बड़े स्टेशन पर! स्टेशन वाले तो पूछते थे कि 'यह क्या है?'

प्रश्नकर्ता : पूरा स्टेशन गूंज उठता था।

दादाश्री : जिन्हें किसी भी प्रकार का बंधन नहीं, कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लोग अंत तक दर्शन कर जाते थे।

दादाश्री : हाँ। वे तो फिर अपने लोग बिल्कुल हँसते-खेलते। उन लोगों को ज़रा बोरियत नहीं, कोई चिंता नहीं।

प्रश्नकर्ता : किसके गरबे गाते थे?

दादाश्री : अपने यहाँ, वे सभी तरह-तरह के गरबे होते हैं न, वे सारे गरबे गाते थे। स्त्री-पुरुष सभी। वे सभी आनंद-आनंद में क्योंकि गाड़ी में बैठे-बैठे पैर अकड़ जाते हैं न, इसलिए जब कोई बड़ा स्टेशन आता था और बीस मिनट का टाइम रहता तो वहाँ पर गरबा गाकर पंद्रह मिनट में सभी वापस लौट आते। दुनिया भी फिदा हो जाए, इस गरबे को देखकर!

स्टेशन पर गरबा करने से प्रकृति होती है सहज

अपने यहाँ ये जो गरबा कर रहे हैं, वे लोग सहज हो गए हैं, जबकि बाहर वाले असहज हैं। अर्थात् हम यह बीच में किसलिए बैठते हैं, हमारे बैठने का कोई कारण है? आपको सहज करना है। किसी भी तरह से आप सहज हो जाओ। ये सारी क्रियाएँ क्या ज्ञानी को शोभा देती हैं? क्या ज्ञानी ऐसे तालियाँ बजाते हैं?

दिन भर इनकी सहजता देखने को मिलती है। कैसी सहजता है! कैसी निर्मल सहजता है, कितने निर्मल भाव हैं! और अहंकार रहित दशा कैसी होती है, बुद्धि रहित दशा कैसी होती है, वह सब देखने को मिलता है।

अपना विज्ञान कैसा है कि सहज रूप से करो, किसी भी तरह से सहज हो जाओ।

ज्ञानी के साथ यात्रा, गज़ब का पुण्य

राजा जो करता है, वह देखने लायक होता है और प्रजा जो करती है, उसे नाच कहते हैं। इसलिए तुझे लोगों से नहीं डरना है। राजा, लोगों से नहीं डरते लेकिन लोग, राजा से डरते हैं। हमने आपको शुद्धात्मा का राजा पद दिया है। ब्रह्मनिष्ठ पद दिया है। इसलिए आप उसी में रहो न! और मुख्यमार्ग से ताली बजाकर पद गाते हुए जाओ, लोगों का डर रखे बगैर। या फिर आत्मार्थ (आत्मा के लिए) कोई भी व्यवहार करो, खुले आम डरे बगैर। निश्चय तो आर्दश स्वभाव का होता ही है। तो करना क्या है? तब व्यवहार को आदर्श बनाना बाकी रहा। इसलिए, हम अलग-अलग प्रसंगो में जो कुछ भी व्यवहार करते हैं, उसे देखते रहने से कि हम किस तरह आदर्श व्यवहार करते हैं, तो उसे देखते रहने से आपको आदर्श व्यवहार सीखने को मिलता है। इसीलिए यात्रा में साथ में घूमना या सत्संग में पड़े रहना।

आकर्षण नहीं छूटता इसलिए लोग मुझसे क्या कहते हैं? दादा, एक बार यात्रा करो। तो दिन भर आपके दर्शन होते रहेंगे। लेकिन जब यात्रा करने जाते हैं न, तब दो-दो डिब्बे होते हैं। तो मैं उन दोनों डिब्बों में ज़रा घूम कर आ जाता हूँ थोड़ी-थोड़ी देर में दर्शन देकर आ जाता हूँ। लेकिन अब कभी फिर ऐसी यात्रा की योजना बनाएँगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : कभी ऐसी योजना बनाएँगे। हमें कुछ भी देखना बाकी नहीं है लेकिन सभी की यात्रा हो, सभी को लाभ मिले, उस हेतु के लिए हमारा यह जीवन है। हमारा जीवन ही इसके लिए है। हमारा यह जीवन खुद के लिए नहीं है। पत्नी व बच्चों का भार तो अनंत जन्मों से बहुत ढोया है। लेकिन ज्ञानी पुरुष का भार नहीं ढोया और यदि ढोया होता तो मुक्ति मिल जाती।

ज्ञानी पुरुष के साथ बहुत लाभ होता है। एक दिन साथ में रहने की क्या वैल्यू है?

प्रश्नकर्ता : दादा, करोड़ों रुपये।

दादाश्री : हाँ। ऐसा कहाँ मिलेगा? करोड़ों रुपये देने पर भी ज्ञानी पुरुष के साथ एक महीने की सम्मेत शिखर की यात्रा कहाँ से मिले? यदि एक करोड़ रुपये दोगे तो भी ज्ञानी पुरुष कहाँ मिलेंगे? यह भी अद्‌भुत है न! महात्माओं का पुण्य है न!

जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

23-25 नवम्बर : पूज्यश्री का तीन दिवसीय सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम निकोल, अहमदाबाद में हुआ। पूज्यश्री को विन्टेज कार में बिठाकर, बैंड-बाजे के साथ स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री का स्वागत किया गया। दो दिनों के प्रश्नोत्तरी सत्संग के बाद 24 नवम्बर को आयोजित ज्ञानविधि में 1235 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। वहाँ पर फार्महाउस में सेवार्थियों के लिए विशेष सत्संग और दर्शन का कार्यक्रम में रखा गया था। आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग हुआ, उसमें बहुत से नए महात्मा पाँच आज्ञा की समझ प्राप्त करने आए थे।

26-28 नवम्बर : वीजापुर में पहली बार पूज्यश्री की निश्रा में ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। नए टाइम टेबल के अनुसार ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्र सत्संग हुआ। उससे पहले प्रोजेक्टर शो और आप्तपुत्रों द्वारा सत्संगों के माध्यम से आसपास के गाँवों में प्रचार किया गया था। पूज्यश्री के साथ सभी स्थानीय महात्माओं तथा आप्तसंकुल के सभी भाई-बहन महुड़ी तीर्थक्षेत्र में घंटाकर्ण महावीर के दर्शन करने गए थे। वहाँ पूज्यश्री ने जगत् कल्याण के लिए भावना करवाई थी। वहाँ के स्थानीय महात्माओं को पूज्यश्री के आगमन के समय पूज्यश्री के स्वागत का, सेवार्थी सत्संग में पूज्यश्री के दर्शन का एवम् पूज्यश्री के साथ मॉर्निंग वॉक का अवसर मिला। वहाँ पर हुई ज्ञानविधि में 1365 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

30 नवम्बर से 2 दिसम्बर : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पूज्य नीरूमाँ का 75वाँ जन्मदिन यानी कि उनके जन्म दिवस की प्लेटिनम जुबली बहुत ही धूमधाम से मनाई गई। ब्लिस गार्डन में हुए इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में पहले दिन 'नीरूमाँ-ऑलराउण्डर' आप्तपुत्रों, आप्तपुत्रियों तथा महात्माओं ने नीरूमाँ के साथ के अपने अनुभव बताए। पूज्यश्री ने भी उनके इस विशेष गुण पर कुछ बातें बताई।

दूसरे दिन सुबह, पूज्य नीरूमाँ के पूज्य दादा के साथ बिताए गए दौर पर आधारित स्पेशल सी डी 'मैं और दादा' दिखलाई गई। उसके बाद महात्माओं ने स्पेशल सामायिक की। शाम को ब्लिस गार्डन में फूड मेले का आयोजन हुआ, जिसमें अलग-अलग (सीमंधर सीटी व ATPL के) सेक्टर के महात्माओं द्वारा अलग-अलग चीजें बनाई गईं। उसमें पूज्य नीरूमाँ की रेसिपी वाली स्पेशल खिचड़ी भी शामिल थी। पूज्यश्री ने सभी स्ट्रॉलों पर जाकर सेवार्थियों का उत्साह बढ़ाया और महात्माओं की उपस्थिति में भोजन प्रसाद लिया। रात में महात्माओं ने पूज्य नीरूमाँ के प्रेम के अनुभव, 'नीरूमाँ-प्रेम स्वरूप', शेयर किए। पूज्यश्री ने भी बताया कि पूज्य नीरूमाँ किस तरह प्रेम स्वरूप बने।

2 दिसम्बर सुबह 6-30 बजे महात्मा भाईयों व बहनों के द्वारा बिज़नेस पार्क व सेक्टर-1 के 4BHK से शोभायात्रा निकाली गई। अलग-अलग ग्रुप के महात्माओं द्वारा नीरूमाँ की पालकी उठाई गई। उसके बाद समाधि पर समूह में प्रार्थना व विधियाँ करवाई गईं। समाधि पर दर्शन करने के बाद पूज्यश्री ने महात्मओं को विशेष संदेश दिया। इस अवसर पर पूज्यश्री ने पूज्य नीरूमाँ द्वारा रचित पदों की स्वरमणा-31 का विमोचन किया गया। इस बार नए प्रयोग के रूप में लगभग 3000 महात्माओं ने नीरूमाँ के लिए पर्सनल गिफ्ट बनाई थीं। महात्माओं की उपस्थिति में पूज्यश्री ने उनमें से तीन गिफ्ट चुनीं। अंत में स्वामी और दादा की आरती की गई। शाम को जगत् कल्याण के लिए एक घंटे की स्वरूप कीर्तन भक्ति की गई। उस दिन आप्तसंकुल के भाईयों व बहनों द्वारा महात्माओं को भोजन प्रसादी परोसी गई। रात को ब्लिस गार्डन में 'नीरूमाँ-ज्ञान स्वरूप' टॉपिक पर पूज्यश्री का विशेष सत्संग हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत पूज्यश्री ने केक काटकर की। जिन महात्मों ने पूज्य नीरूमाँ को गिफ्ट दी थी, उन्हें प्रसादी के रूप में रिर्टन गिफ्ट दी गई। इस नए प्रयोग को लेकर महात्मों में अनोखा आनंद देखने को मिला।

5-8 दिसम्बर : भुज (कच्छ) में सत्संग-ज्ञानविधि एवम् ज़ोनल शिविर के लिए पूज्यश्री अहमदाबाद से कंडला तक हवाई जहाज द्वारा पहुँचे। वहाँ उनका कच्छ के महात्माओं द्वारा उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। पूज्यश्री अंजार

और भुज के त्रिमंदिर में दर्शन करने गए थे। पहले दिन आप्तपुत्र सत्संग हुआ। दूसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि में 1310 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। उसके बाद जामनगर एवम् कच्छ के महात्माओं के लिए ज़ोनल शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में पहले दिन शाम को महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ रिसोर्ट में समय बिताया, उसमें गरबा, GNC के बच्चों द्वारा कल्चरल प्रोग्राम, इनफॉर्मल सत्संग हुआ, पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ भोजन प्रसाद भी लिया। भुज त्रिमंदिर के परिसर में पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ मॉर्निंग वॉक किया, वहाँ दादा दरबार में सभी को दर्शन का लाभ मिला।

10-12 दिसम्बर : मोरबी में तीन साल के बाद पूज्यश्री के सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस बार नए मुमुक्षुओं के लिए यह कार्यक्रम नई जगह पर रखा गया। पहले दिन 'इस काल में खुला मोक्षमार्ग' टॉपिक पर सत्संग के बाद पश्नोत्तरी सत्संग हुआ। दूसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि में 1650 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री ने मोरबी के त्रिमंदिर में सभी देवी-देवताओं के दर्शन किए, उसके बाद सभी सेवार्थियों से मिलकर उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया।

12-16 दिसम्बर : राजकोट में इस साल दूसरी बार पूज्यश्री के सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के पहले दिन प्रसिद्ध हास्य कलाकार श्री सांईराम दवे द्वारा पूज्यश्री को उनके ग्रुप में सत्संग के लिए आमंत्रित किया गया। जिसका टॉपिक था 'समर्थ राष्ट्र, समर्थ परिवार' पूज्यश्री ने प्रासंगिक सत्संग और प्रश्नोत्तरी के दौरान माँ-बाप-बच्चे, पति-पत्नी और परिवारिक प्रश्नों के जवाब में दादाश्री के सिद्धांत बताए। जिसका 1200 से भी अधिक मुमुक्षुओं ने लाभ लिया। 13 तारीख को टॉपिक 'सूझ-कॉमनसेंस' और 14 तारीख को 'असली पहचान ज्ञानी की' टॉपिक पर पूज्यश्री का सत्संग हुआ। उसके बाद जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। 15 दिसम्बर को आयोजित ज्ञानविधि में 1525 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। उसके बाद स्थानीय महात्माओं के लिए मॉर्निंग वॉक, पूज्यश्री को भोजन परोसने की सेवा, सेवार्थी सत्संग और पूज्यश्री के दर्शन का आयोजन हुआ। अगले दिन 16 दिसम्बर को ज्ञानविधि के पाँच आज्ञा और आत्मज्ञान और अधिक समझने के लिए आप्तपुत्र सत्संग रखा गया था।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 9 से 9-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8 तथा शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम से शुक्र सुबह 7 से 7-30 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हररोज़ पर सुबह 7 से 7-30, दोपहर 2 से 2-30 रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- '**TV Asia**' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 9 GMT
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30am GMT)
- '**MA TV**' पर हर रोज, शाम 5-30 से 6-30 GMT - (गुजराती में)

Australia
- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ➢ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE

USA-UK-Africa-Aus.➢ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

अकोला **दिनांक : 1 फरवरी** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9422403002
स्थल : 'अम्बिका', बजरंग भवन के सामने, श्रोगी प्लोट्स, अकोला.

अमरावती **दिनांक : 2 फरवरी** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9403411471
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेंटर, अंबुजा सीमेंट ऑफिस, कॉरपोरेशन बैंक के नीचे, राजापेठ, अमरावती.

नागपुर **दिनांक : 3 फरवरी** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 7249362999
स्थल : श्री संत गजानन महाराज मंदिर, उमरेड रोड, निर्मल नगर, नागपुर.

चंद्रपुर **दिनांक : 4 फरवरी** **समय :** शाम 8 से 10 **संपर्क :** 9850345907
स्थल : नगर परिषद क्वाटर 15, बाबूपीठ वार्ड, बालाजी मंदिर के पीछे, हुडको कॉलोनी, चंद्रपुर

नांदेड **दिनांक : 5 फरवरी** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 8806665557
स्थल : प्लॉट-16, महावीर सोसायटी, कब्दे हॉस्पिटल रोड, शिवाजी नगर, नांदेड़.

नांदेड **दिनांक : 6 फरवरी** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 8806665557
स्थल : कुसुम सभाग्रह, ITM कोलेज, वी.आई.पी. रोड, नांदेड़.

हल्द्वानी **दिनांक : 10 फरवरी** **समय :** दोपहर 2-30 से 5-30 **संपर्क :** 9412084002
स्थल : सील्वर स्टोन पब्लीक स्कूल, लालदंथ बायपास रोड, अंबानगर, कलाधुंगी रोड, हलद्वानी.

किच्छा **दिनांक : 11 फरवरी** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9411594699
स्थल : वोर्ड नं. 8, पंत कोलोनी, किच्छा.

ऋषिकेश **दिनांक : 14 फरवरी** **समय :** सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क :** 9012279556
स्थल : दादा भगवान परिवार सत्संग, भल्ला फार्म, श्यामपुर बाय पास, N.D.S. स्कूल के पास, ऋषिकेश.

देहरादून **दिनांक : 14 फरवरी** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9012279556
स्थल : प्रेम भवन, ओशो आश्रम के सामने, पोस्ट ऑफिस रोड, क्लेमेनटाउन सोसायटी एरिया, देहरादून.

हैदराबाद	दि : 7-9 फरवरी	संपर्क : 9885058771	रायपुर	दि : 3 अप्रैल	संपर्क : 9329523737
रुड़की	दि : 13 फरवरी	संपर्क : 9719415074	वाराणसी	दि : 4-6 अप्रैल	संपर्क : 9795228541
उज्जैन	दि : 5 मार्च	संपर्क : 9425195647	गोरखपुर	दि : 7 अप्रैल	संपर्क : 9935949099
इन्दौर	दि : 6-7 मार्च	संपर्क : 9893545351	गोरखपुर	दि : 13 अप्रैल	संपर्क : 9935949099
भोपाल	दि : 8-9 मार्च	संपर्क : 9425190511	कुशीनगर	दि : 8 अप्रैल	संपर्क : 6388218155
जबलपुर	दि : 10-11 मार्च	संपर्क : 9425160428	महाराजगंज	दि : 9 अप्रैल	संपर्क : 9793353018
इलाहाबाद	दि : 2 अप्रैल	संपर्क : 9935378914	रुपानदेही	दि : 10-12 अप्रैल	संपर्क : +977-9847042399
मिर्जापुर	दि : 3 अप्रैल	संपर्क : 9415288161	कोलकाता	दि : 12 अप्रैल	संपर्क : 9831079123

समय व स्थल के हेतु उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें

महात्माओं के लिए आप्तपुत्रों के साथ विशेष शिविर

काशीपुर (उतराखंड) के महात्माओं के लिए - तारीख - **8 व 9 फरवरी 2020**

स्थल: चौहान सभा, कृपाल आश्रम के पास, गौतम नगर, काशीपुर, जनपद-उधम सिंह नगर (उतराखंड).

रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क : काशीपुर : 9457635398, 9456595435, **हल्द्वानी** : 9412084002, **किच्छा** : 9411594699

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 25 जनवरी 2020 है.

हरिद्वार (उतराखंड) के महात्माओं के लिए - तारीख - **15 व 16 फरवरी 2020**

स्थल: सियाराम जानकी वल्लभ सेवा सदन, दूधाधारी चौक, सांईबाबा वाली गल्ली, भूपत वाला, हरिद्वार.

रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क : हरिद्वार : 9719415074, **देहरादून** : 9012279556, **ऋषिकेश** : 8126189628

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 31 जनवरी 2020 है.

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

वडोदरा

31 जनवरी - 1 फरवरी (शुक्र-शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग और 2 फरवरी** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
3 फरवरी (सोम) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : शालिन कोम्प्लेक्ष के सामने का मैदान, पाटीदार चौकडी, ईवा मोल के पास, मांजलपुर. **संपर्क :** 9825010984

दाहोद

4 फरवरी (मंगल) शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग और 5 फरवरी** (बुध) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**
6 फरवरी (गुरु) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : टेणा प्लोट, आंबावाडी, गोविंदनगर, दाहोद. **संपर्क :** 9427013319

भावनगर

29 फरवरी (शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग और 1 मार्च** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
2 मार्च (सोम) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : जवाहर मैदान, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, भावनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9924344425

अमरेली

3 मार्च (मंगल) शाम 7 से 10 - **सत्संग और 4 मार्च** (बुध) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**
5 मार्च (गुरु) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : न्यु खेडूत तालिम केन्द्र (फार्म वाडी), लिलिया रोड, त्रिमंदिर के पास, अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 9924344460

धोराजी

6 व 8 मार्च (शुक्र व रवि) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग और 7 मार्च** (शनि) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : लेउवा पटेल रोड समाज, जमनावड रोड, धोराजी, जि. राजकोट (गुजरात). **संपर्क :** 7777979894

वेरावल

8 व 10 मार्च (रवि व मंगल) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग और 9 मार्च** (सोम) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**
स्थल : सांईबाबा मंदिर के सामने, वेरावल-जूनागढ़ हाईवे, वेरावल, जि. गीर-सोमनाथ (गुजरात). **संपर्क :** 9924344459

पोरबंदर

10 व 12 मार्च (मंगल व गुरु) शाम 6-30 से 9-30 - **आप्तपुत्र सत्संग और 11 मार्च** (बुध) शाम 6 से 9-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : चोपाटी पार्टी प्लोट, हाथी ग्राउन्ड के सामने, चोपाटी, पोरबंदर (गुजरात). **संपर्क :** 9574001243

अडालज त्रिमंदिर

19 मार्च (गुरु), **पूज्य नीरुमाँ की 14वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**
20-21 मार्च (शुक्र-शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **22 मार्च** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

6 से 10 मई - सत्संग शिविर (समय की घोषणा बाकी)

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी आने वाले अंक में दी जाएगी। **रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।**

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2020

20 से 24 मई - सत्संग शिविर तथा 23 मई - ज्ञानविधि (समय की घोषणा बाकी)

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी मार्च 2020 के अंक में दी जाएगी। **रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।**

जनवरी 2020
वर्ष-15 अंक-3
अखंड क्रमांक - 171

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

यात्रा किसलिए ?

यात्रा तो उसे कहते हैं कि जो आत्महेतु के लिए या भक्ति हेतु के लिए हो! हेतु, भक्ति का होना चाहिए। वहाँ पर लक्ष्मी कमाने का हेतु नहीं होना चाहिए। हम सम्मेत शिखर जाते हैं, तो क्या कुछ कमाने के लिए जाते हैं ? यात्रा का महत्व तो यही कि ज्ञानी पुरुष के साथ रहने को मिलता है। यात्रा में तो घूमते-फिरते, खाते-पीते हुए, सब करते हुए भी निरंतर मोक्ष ही! और अभी तक जो विराधनाएँ की हैं, उनकी आराधना होने से विराधनाएँ खत्म हो जाती हैं। हम यात्रा में जाते हैं तो सभी जगह दर्शन करते हैं। अपना तो यह निष्पक्षपाती मार्ग है न!

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.